SAHABI KI INFIRADI KOSHISH (HINDI)

मदीने के पहले मुबल्लिग़ की
ह़याते त़य्यिबा की रोशनी में नेकी की दा'वत के नायाब
मदनी फूलों पर मुश्तमिल फ़िक्र अंगेज़ बयान

# सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश

मदीने शरीफ़ की यादगार क़दीम तस्वीर

- मदीनए मुनव्वरा का पहला मुबल्लिग़ 17
- तबलीग़ की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत 32
- नेकी की दा'वत के बुन्यादी अरकान 37
- मुबल्लिग़ व दाई को कैसा होना चाहिये ? 43
- नेकी की दा'वत और अमीरे अहले सुन्नत 60



मर्क्ज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# किताब पढ़ने की दुआ

**अज़ :** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जेल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

**13** शव्वालुल मुकर्रम **1428** हि.

# क़ियामत के रोज़ ह़सरत

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।



www.dawateislami.net

# सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

## उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त = ت | फ = پھ | प = پ | भ = بھ | ब = ب | अ = ا |
| झ = جھ | ज = ج | स = ث | ठ = ٹھ | ट = ٹ | थ = تھ |
| ढ = ڈھ | ध = دھ | ड = ڈ | द = د | ख़ = خ | ह़ = ح |
| ज़ = ژ | ज़ = ز | ढ़ = ڑھ | ड़ = ڑ | र = ر | ज़ = ذ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ = ع | ज़ = ظ | त़ = ط | ज़ = ض | स = ص | श = ش | स = س |
| ग = گ | ख = کھ | क = ک | क़ = ق | फ़ = ف | ग़ = غ | ' = ع |
| य = ى | ह = ه | व = و | न = ن | म = م | ल = ل | घ = گھ |
| ् = ْ | ु = ُ | ि = ِ | – = َ | ी = ئ | ृ = ؤ | ा = آ |

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net



www.dawateislami.net

मदीने के पहले मुबल्लिग़ की ह़याते त़य्यिबा की रोशनी में नेकी की दा'वत के नायाब मदनी फूलों पर मुश्तमिल फ़िक्र अंगेज़ बयान

# सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश

-: पेशकश :-

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, देहली



www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ


**नाम किताब** : **सहाबी की इनफ़िरादी कोशिश**

**पेशकश** : **मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)**

**सिने तबाअत** : **रजबुल मुरज्जब 1436 हि. ब मुताबिक़ मई 2015 ई.**

**नाशिर** : **मक्तबतुल मदीना, देहली-6**


## -: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-


❁...**अहमदाबाद** : फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 09327168200

❁... **मुम्बई** : फ़ैज़ाने मदीना, पहला मन्ज़िला, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खडक, मुम्बई 400005, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁... **नागपुर** : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 07304052526

❁.... **अजमेर** : 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर, राजस्थान, फ़ोन : (0145) 2629385

❁....**हुबली** : ए.जे. मुधोल कोम्पलेक्स, ए.जे. मुधोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

❁... **हैदराबाद** : मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तिलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

❁... **कानपुर** : मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पड़ाव, गुर्बत पार्क, कानपुर, यु.पी, फ़ोन : 09335272252

❁... **बनारस** : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तकिया, मदन पुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101

**E-mail : ilmiapak@dawateislami.net**

**www.dawateislami.net**


मदनी इलतिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं



www.dawateislami.net

# याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी

| उनवान | सफ़्हा | उनवान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# "इनफ़िरादी कोशिश" (उर्दू) के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ

"मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

**दो मदनी फूल :-**

(1) बिग़ैर **अच्छी निय्यत** के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी **अच्छी निय्यतें** ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार **ह़म्द** व **सलात** और (2) **तअ़व्वुज़** व **तस्मिय्या** से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (3) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर **मुत़ालआ़** करूंगा। (4) ह़त्तल वस्अ़ इस का **बा वुज़ू** और (5) **क़िब्ला रू** मुत़ालआ़ करूंगा (6) क़ुरआनी आयात और (7) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। (8) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां "عَزَّوَجَلَّ" (9) और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" पढ़ूंगा। (10) इस ह़दीसे पाक تَهَادَوْا تَحَابُّوْا एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث: ۱۷۳۱، ج۲، ص۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा (11) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)



www.dawateislami.net

# फ़ेहरिस्त


| उनवान | सफ़हा | उनवान | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| सहाबी की इनफ़िरादी कोशिश | 7 | हर एक अपने अपने मन्सब के मुताबिक़ नेकी की दा'वत दे | 35 |
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 7 | अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जिस का फ़ाइदा दूसरों को पहुंचे | 36 |
| शम्ए रिसालत का परवाना | 8 | नेकी की दा'वत के बुन्यादी अरकान | 37 |
| आशूबे चश्म के मरीज़ | 11 | इनफ़िरादी कोशिश | 38 |
| महब्बतों की ज़न्जीरें टूट गईं | 13 | **नायाब मदनी फूल** | 43 |
| वतन वापसी और दोबारा हिजरत | 15 | मुबल्लिग़ व दाई को कैसा होना चाहिये ? | 43 |
| मदीनए मुनव्वरा का पहला मुबल्लिग़ | 17 | ईमाने कामिल | 43 |
| येह मुन्तख़ब नौजवान कौन था ? | 19 | अ़लामाते ईमाने कामिल | 44 |
| ह़सब व नसब | 20 | इख़्लास | 46 |
| अज़्वाज व अवलाद | 20 | रियाकार का अन्जाम | 48 |
| बत़ौरे मुबल्लिग़ इन्तिख़ाब | 21 | इल्मो अ़मल का पैकर | 49 |
| वुजूहात | 22 | इल्मो अ़मल की अहम्मिय्यत | 50 |
| इन्तिख़ाब की लाज | 25 | बे अ़मली के मुतअ़ल्लिक़ तीन अहादीसे मुबारका | 51 |
| आप की 12 माह की कारकर्दगी | 27 | नेकी की दा'वत कौन दे ? | 52 |
| दीदारे मुस्त़फ़ा की तड़प | 28 | सुन्नतों का पैकर | 56 |
| मां से आख़िरी मुलाक़ात | 29 | जिद्दत पसन्द मुबल्लिग़ीन के लिये मदनी फूल | 58 |
| **ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तब्लीग़ी सरगर्मियों पर एक नज़र** | 32 | वलवला व जज़्बा | 59 |
| तब्लीग़ की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत | 32 | नेकी की दा'वत और अमीरे अहले सुन्नत | 60 |
| नेकी की दा'वत | 34 | नेकी की दा'वत में इस्तिक़ामत | 63 |




www.dawateislami.net

| उनवान | सफ़हा |
|---|---|
| एक हाथ पर सूरज दूसरे पर चांद | 64 |
| हुसूले इस्तिक़ामत का ज़रीआ़ | 66 |
| अमीरे अहले सुन्नत और उ़लमाए अहले सुन्नत | 67 |
| अग़यार की पैरवी से इजतिनाब | 69 |
| अज़ान की इब्तिदा | 69 |
| ख़ुश अख़्लाक़ी | 71 |
| नर्म मिज़ाजी | 71 |
| तुम से बेहतर, मुझ से बदतर | 72 |
| ख़न्दा पेशानी | 73 |
| नफ़रत महब्बत में बदल गई | 74 |
| सब्रो तह़म्मुल और बुर्दबारी व दर गुज़र | 75 |
| सब्रो तह़म्मुल की आ'ला मिसाल | 76 |
| बुर्दबारी व दर गुज़र की आ'ला मिसाल | 77 |
| अमीरे अहले सुन्नत की बुर्दबारी | 78 |
| ख़ुद ए'तिमादी | 81 |
| मुआ़मला फ़ह्मी | 83 |
| सोने चांदी से ज़ियादा ह़सीन नसीह़तें | 84 |
| गर्म लोहे पे चोट कारी वरना बेकारी | 86 |
| मुआ़मला फ़ह्मी के हुसूल की सूरतें | 87 |
| (1) मुख़ातब कौन है ? | 88 |
| मुख़ातब की त़बीअ़त का ख़याल रखना | 88 |
| मुख़ातब की ह़ैसिय्यत व मर्तबे का ख़याल रखना | 90 |
| मुख़ातब की ज़ेह्नी सलाह़िय्यत का ख़याल रखना | 92 |
| मुख़ातब की ज़ेह्नी सलाह़िय्यत के मुताबिक़ आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश | 94 |
| शुकूक व शुब्हात दूर करना | 96 |
| आ'ला ह़ज़रत की ग़ैर मुस्लिम पर इनफ़िरादी कोशिश | 97 |
| (2) नेकी की दा'वत कैसी है ? | 101 |
| मुझे गुनाह की इजाज़त दीजिये | 102 |
| **सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर के दीगर अवसाफ़े ह़मीदा** | 104 |
| ज़ोह्दो तक़्वा | 104 |
| बारगाहे रिसालत में पज़ीराई | 105 |
| अख़्लाक़े ह़मीदा की गवाही | 107 |
| बद्र व उ़हुद में शर्फ़े अ़लम बरदारी | 108 |
| आक़ा पर जान क़ुरबान कर दी | 110 |
| जान देदी मगर परचमे इस्लाम पर आंच न आने दी | 111 |
| बा हिम्मत ज़ौजा | 113 |
| क़ातिल की इ़ब्रतनाक मौत | 116 |
| तक्फ़ीन | 116 |
| तदफ़ीन | 117 |
| अनमोल दर्स | 118 |
| मआख़िज़ो मराजेअ़ | 120 |




www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश[1]

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़बूआ़ **50** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, **''जन्नती महल़ का सौदा''** में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दुरूदे पाक की येह फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाई है कि मालिके ख़ुल्दो कौसर, शाहे बह़रो बर, मदीने के ताजवर, अम्बिया के सरवर, रसूलों के अफ़्सर, रसूले अन्वर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर

---

①.....मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي ने येह बयान ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम **1428** हि. ब मुत़ाबिक़ दिसम्बर **2007** ई. को औरंगी टाऊन बाबुल मदीना कराची में तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे तर्बिय्यती इजतिमाअ़ में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है।



www.dawateislami.net

दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## शम्ए रिसालत का परवाना

अ़रब शरीफ़ के जो बे वक़्अ़त ज़र्रे, नूरे मुस्त़फ़ा से मुनव्वर हो कर आस्माने रुश्दो हिदायत के रोशन सितारे बने उन में **बनी अ़ब्दुद्दार** के एक मुतमव्वल घराने में पैदा होने वाला वोह ह़सीनो जमील नौजवान भी था जिस के पैदा होते ही मसर्रत व शादमानी ने गोया उस घर में डेरे डाल लिये थे, हर त़रफ़ ख़ुशियां ही ख़ुशियां थीं, मालो दौलत की फ़िरावानी थी, वालिदैन अपने इस नूरे नज़र को दुन्या की हर आसाइश फ़राहम करने में कोई कसर न छोड़ते, मां ख़ुनास बिन्ते मालिक और बाप उ़मैर बिन हाशिम को अपने लख़्ते जिगर के सिवा कुछ सुझाई ही न देता था। मां बाप की आंखों के इस नूर ने नाज़ो नेअ़म (ऐ़शो इ़शरत, लाड-प्यार) में पल बढ़ कर जब जवानी की ह़ुदूद में क़दम रखा तो नाज़ो अदा का आ़लम येह था कि जो देखता बस देखता रह जाता, इस लिये कि इस दुर्रे नायाब[2] का लबादा ऐसा होता जो मक्का के किसी फ़र्द का न होता, ख़ुश्बू में ऐसे बसा होता कि जिधर से गुज़रता राहें मुअ़त्त़र हो

[1] .....مسند ابی یعلٰی، الحدیث: ۲۹۵۱، ج۳، ص۹۵

②..... या'नी ऐसा क़ीमती मोती जो इन्तिहाई कमयाब हो, आ़म त़ौर से मयस्सर न आए या जो बड़ी ज़ह़मतों से दस्तयाब हो।



www.dawateislami.net

जातीं और गुज़रगाहें भी इस के गुज़रने की गवाही देतीं।(1)

ज़िन्दगी के शबो रोज़ ऐशो इशरत के गुलिस्तां की बहारों से ख़ूब लुत्फ़ अन्दोज़ होते हुवे गुज़र रहे थे कि एक दिन अचानक नाज़ो नेअ़म के इस परवर दह (پَر۔وَر۔دَہ या'नी पले हुवे) नौजवान की समाअ़त व बसारत शदीद मुतअस्सिर हुई। जब इस की निगाह अ़रब के माहे मुबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पड़ी और इस के कानों में पैग़ामे इलाही की आवाज़ तासीर का तीर बन कर पैवस्त हो गई। माहे मुबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ही झलक देख कर इसे अपनी कम माएगी (कम हैसिय्यत होने) का एह़सास हुवा और इस का हुस्न मांद पड़ गया। ऐसा क्यूंकर न होता कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने माहे मुबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल का तज़किरा करते हुवे कुछ यूं फ़रमाया :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

وَاَحْسَنَ مِنْكَ لَمْ تَرَ قَطُّ عَيْنِيْ

وَاَجْمَلَ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَآءُ

*आप से बढ़ कर ह़सीन आज तक मेरी आंखों ने देखा ही नहीं और आप से ज़ियादा ख़ूब सूरत तो किसी औ़रत ने जना ही नहीं।*

خُلِقْتَ مُبَرَّأً مِّنْ كُلِّ عَيْبٍ

كَاَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَآءُ

*आप हर ऐ़ब से पाक पैदा किये गए हैं गोया कि आप को आप की मरज़ी व मन्शा के मुत़ाबिक़ पैदा किया गया है।*

---

(1)…الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم ٥٣ مصعب الخير، ج٣، ص ٨٦



www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने भी सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ुस्नो जमाल को इन अल्फ़ाज़ में क्या ख़ूब बयान किया है :

*ह़ुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगूश्ते ज़नां*
*सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अ़रब*

पस येह नौजवान फ़ौरन दारे अरक़म में मालिके जन्नत, सरापा रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और इस ने दौलते ईमान से सरफ़राज़ हो कर अपना मुक़द्दर संवार लिया। फिर अपने ईमान की ज़ियाबारियों (रोशनियों) को मज़ीद दवाम बख़्शने के लिये सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत को अपनी आंखों का सुर्मा बना लिया। येह नौजवान ख़ूब जानता था कि जिस मुआ़शरे का येह ह़िस्सा है वोह कुफ़्रो शिर्क की गहरी दलदल में ग़र्क़ है लिहाज़ा जिन लोगों के क़ुलूब व अज़्हान अभी तक नूरे इस्लाम से मुनव्वर नहीं हुवे जब वोह दीने ह़क़ के ह़ुस्नो कमाल को समझ न पाएंगे तो वोह अपने साथ साथ इसे भी बह़रे जहालत की अथाह गहराइयों में ले डूबेंगे। इसी ख़ौफ़ के पेशे नज़र इस ने दूसरों से अपना मुसलमान होना मख़्फ़ी रखा और छुप छुप कर दरे अक़्दस की ह़ाज़िरी जारी रखी।[1]

[1] .....الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج ۳، ص ۸۶



www.dawateislami.net

## आशूबे चश्म के मरीज़

एक दिन किसी[1] ने इस नौजवान को बारगाहे ख़ुदावन्दी में सजदा रेज़ देखा तो फ़ौरन जा कर इस के वालिदैन को ख़बर दी कि इन के बेटे ने अपना आबाई दीन छोड़ दिया है।[2] वालिदैन की आंखों पर चूंकि कुफ़्र की पट्टी बन्धी थी और दिल शिर्क के दबीज़ ग़िलाफ़ (मोटे पर्दे) में लिपटा हुवा था और वोह तुलूए सह्र की पुर नूर किरनों को देखने और दा'वते ह़क़ समझने से बे बहरा थे, लिहाज़ा येह कैसे मुमकिन था कि वोह बेटे की मह़ब्बत में इतनी आसानी से इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत के सामने सरे तस्लीम ख़म कर देते ? और अगर ऐसा कर भी लेते तो यक़ीनन इन्हें रुअसाए क़ुरैश (क़ुरैश के सरदारों) की दुश्मनी का सामना करना पड़ता। चुनान्चे, वालिदैन ने अपने बेटे को क़ुरैश की तकालीफ़ से बचाने के लिये घर में ही क़ैद कर दिया क्यूंकि वोह इस से बे पनाह मह़ब्बत करते थे, और नहीं चाहते थे कि कोई इन के बेटे को किसी क़िस्म की तक्लीफ़ पहुंचाए, इस लिये कि वोह इस के माथे की शिकन तक बरदाश्त न कर सकते थे तो इसे ख़ून में लत पत कैसे देख सकते थे ? येह नौजवान ही तो उन की उम्मीदों का सहारा और आंखों का तारा था, इस की ऐसी कौन सी ख़्वाहिश थी जो उन्हों ने

---

①.....येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे जिन्हों ने अभी तक इस्लाम क़बूल न किया था।

[2].....الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، الرقم ۲۵۶۲ مصعب بن عمیر، ج ۴، ص ۳۷



www.dawateislami.net

पायए तक्मील तक न पहुंचाई हो। येह सुब्ह़ बिस्तर से उठता तो मां अपने लख़्ते जिगर के लिये मनपसन्द नाश्ता इस के उठने से पहले इस के सिरहाने रख देती जिस की भीनी भीनी ख़ुश्बू इसे बड़ी पसन्द थी[1] और अब ह़ाल येह है कि वालिदैन ने अपने सीने पर पथ्थर रख कर अपने लख़्ते जिगर को अन्धेरे कमरे में क़ैद कर दिया है और हर त़रह़ इस कोशिश में मगन हैं कि किसी त़रह़ इन का लख़्ते जिगर दिन के उजाले से दूर रहे। दर ह़क़ीक़त आशूबे चश्म की दाइमी बीमारी (या'नी कुफ़्रो शिर्क) ने इस नौजवान के वालिदैन को अन्धेरे का आ़दी बना रखा था, उन की आंखें सूरज की रोशनी बरदाश्त नहीं कर सकती थीं और येह नादान अपने तन्दुरुस्त लख़्ते जिगर को भी अपनी त़रह़ आशूबे चश्म का मरीज़ जान कर रोशनी से बचा रहे थे और येह नहीं जानते थे कि इन का जिगर गोशा जिन के दामने करम से वाबस्ता है वोह तो त़बीबों के त़बीब, रब्बे ज़ुल जलाल के ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।

***आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे***
***दीदए कोर को क्या आए नज़र ? क्या देखे ?***

क़ैदो बन्द की सुऊ़बतें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीवाने की दीवानगी में कमी के बजाए मज़ीद इज़ाफ़े का बाइस बनीं क्यूंकि येह परवाना जानता था कि इस की

---

[1]......الروض الانف، مصعب بن عمیر ووفد العقبۃ، ج ۲، ص ۲۵۲


www.dawateislami.net

आंखों में जिस हस्ती के जमाले जहां आरा (दुन्या को आरास्ता करने वाले नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल) की सूरत बसी हुई है इस में हुस्न और जमाल व ज़ैबाई की तमाम दिल रुबाइयां ख़ालिक़ ने जम्अ़ फ़रमा दी हैं ताकि जो भी दीवाना इस बारगाहे जमाल में आए तो ऐसा खो जाए कि बस यहीं का हो कर रह जाए।

*मक्तबे इश्क़ का दस्तूर निराला देखा*
*उस को छुट्टी न मिली जिस ने सबक़ याद किया*

## महब्बतों की ज़न्जीरें टूट गईं

जब शम्ए़ तौहीदो रिसालत के परवानों पर कुफ़्रो शिर्क के अन्धेरों में डूबे हुवे अहले मक्का का ज़ुल्मो सितम ह़द से बढ़ने लगा और ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि इन मज़ालिम में आए रोज़ इज़ाफ़ा ही होता चला जा रहा है, संग दिल ज़ालिमों को ज़रा तरस आता है न किसी दूसरे शख़्स में रह़मत व शफ़्क़त का जज़्बा बेदार हो कर तौह़ीद के इन नाम लेवाओं की नजात का बाइस बनता है और न ख़ुद मुसलमानों में इतनी सकत है कि वोह अपने मज़लूम भाइयों की दाद-रसी (चारा साज़ी) कर सकें तो आप की इजाज़त से मुशरिकीने मक्का की शर अंगेज़ियों से तंग आ कर ज़ुल्मो सितम की इस बस्ती से हिजरत कर के जब आप के जांनिसार ग़ुलामों का



www.dawateislami.net

एक क़ाफ़िला सूए ह़बशा रवाना होने लगा तो मक्के का येह ह़सीन नौजवान भी वालिदैन की मह़ब्बत और उन की यादों से नाता़ तोड़ कर सूए ह़बशा चल दिया और वालिदैन की बे पनाह मह़ब्बत भी इस के पाउं की ज़न्जीर न बनी ।[1]

इस नौजवान की मां पहले ही बेटे के क़बूले इस्लाम के सबब दिल बरदाश्ता थी इस के लिये बेटे की जुदाई की येह ख़बर बिजली गिरने से कम न थी । चुनान्चे, इस ने क़सम खा ली कि अपने नूरे नज़र की वापसी तक कुछ खाएगी न पियेगी, रात दिन खुले आस्मान तले पड़ी रहेगी यहां तक कि जिगर के टुकड़े की दीद से आंखें ठन्डी हो जाएं। आख़िरे कार भूक प्यास की शिद्दत पर तेज़ धूप ने ज़र्बे कारी का काम दिखाया और इस पर बे होशी की ह़ालत बार बार त़ारी होने लगी तो इस के दूसरे बेटे वालिदा के मुंह में क़त़रा क़त़रा पानी डालते रहे ताकि कहीं इस का दम ही न निकल जाए।[2]

इस नौजवान की इस्तिक़ामत पर हज़ारों जानें क़ुरबान ! मां बेटे की जुदाई में तड़प रही थी मगर इस्लाम की मह़ब्बत कुछ इस त़रह़ इस नौजवान के दिल में समाई कि इस के सामने तमाम मह़ब्बतें हैच हो गईं और मां की सारी शफ़्क़तें भुला कर इस ने सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत को अपने दिल में बसा लिया कि जो मां से सत्तर गुना ज़ियादा अपने बन्दे पर शफ़्क़त फ़रमाने वाला है ।

---

[1] .....اسد الغابۃ، الرقم ۴۹۲۹ مصعب بن عمیر، ج۵، ص۱۹۰

[2] .....الروض الانف، مصعب بن عمیر ووفد العقبۃ، ج۲، ص۲۵۲



www.dawateislami.net

मां बेटे की फ़ितरी महब्बत से इन्कार मुमकिन नहीं मगर येह नौजवान कमाले ईमान के जिस दरजे पर फ़ाइज़ हो चुका था इस का अन्दाज़ा इस बात से ब ख़ूबी लगाया जा सकता है कि इस नौजवान ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने ख़ुशबूदार لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ (1) "या'नी तुम में से कोई उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उस के वालिदैन, अवलाद और तमाम लोगों से बढ़ कर महबूब न हो जाऊं" पर अमल कर के शम्ए रिसालत के परवानों के लिये महब्बत की एक ऐसी मिसाल क़ाइम कर दी जिस के नुक़ूश तारीख़ के अवराक़ में सुन्हरी हुरूफ़ से लिखे हुवे हैं।

*इक क़ैस को लैला ने मजनूं बनाया था*
*तुम ने तो जिसे देखा दीवाना बना डाला*

## वतन वापसी और दोबारा हिजरत

बिअ़सत के पांचवें साल **रजबुल मुरज्जब** में जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की सरबराही में बारह मर्दों और चार औ़रतों पर मुश्तमिल येह क़ाफ़िला हबशा पहुंचा तो हबशा के बादशाह नज्जाशी ने राहे ख़ुदा के इन मुसाफ़िरों की ख़ूब ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई और येह तमाम लोग आज़ादी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने लगे। अभी तीन माह ही गुज़रे

(1) .....بخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول من الایمان، الحدیث ۱۴، ج ۱، ص ۱۵



www.dawateislami.net

थे कि इन्हों ने येह अफ़्वाह सुनी : **अहले मक्का ने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत को तस्लीम कर लिया है और अब मक्का में मुसलमानों को कोई तक्लीफ़ नहीं ।** वत़न से दूर मुहाजिरीन को येह ख़बर बड़ी रूह़ अफ़्ज़ा मह़सूस हुई । चुनान्चे, येह सुन कर हुस्ने मुस्त़फ़ा के शैदाई ख़ुद पर क़ाबू न रख सके और दीदारे नबी की सआ़दतों से फ़ैज़याब होने के लिये फ़ौरन बा'ज़ ने वापसी की राह ली और बा'ज़ ह़तमी इत्त़िलाअ़ के इन्तिज़ार में वहीं रुके रहे और जब रास्ते में ही इन्हें ह़क़ीक़त मा'लूम हुई तो बा'ज़ वापस चले गए और बा'ज़ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद में तड़पने वाले दीवानों ने जुदाई की अज़िय्यतों को बरदाश्त करने पर मक्का वालों के ज़ुल्मो सितम सहने को तरजीह़ दी और आख़िर मक्कए मुकर्रमा पहुंच गए, इन वापस आने वालों में येह ह़सीन नौजवान भी था ।(1)

मक्का पहुंचने पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन्हें आड़े हाथों लिया और यूं ज़ुल्मो सितम के एक नए बाब का आग़ाज़ हुवा । चुनान्चे, **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा अपने जां निसारों को ह़बशा जाने का हुक्म दिया और इस त़रह़ येह ह़सीन नौजवान फिर अपने आक़ा के हुक्म पर लब्बैक कहते हुवे 82 या 83 मर्दों और 18 औ़रतों के क़ाफ़िले में शरीक

---

1 ...... الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج۳، ص۸۶
شرح الزرقانی علی المواھب، ج۱، ص۵۰۳ وج۲، ص۱۶



www.dawateislami.net

हो कर सूए ह़बशा रवाना हो लिया।[1] कुफ़्फ़ारे मक्का को जब येह मा'लूम हुवा कि मुसलमान ह़बशा में ख़ुश व ख़ुर्रम ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं तो गोया उन के सीनों पर सांप लौटने लगे, उन्हों ने हर मुमकिन कोशिश की, कि किसी त़रह़ मुहाजिरीने ह़बशा की ख़ुशियों में ज़ह्र की आमेज़िश की जाए मगर उन की कोई तदबीर कारगर साबित न हुई। अलबत्ता ! बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से ज़ियादा देर तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई बरदाश्त न हो सकी और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मदीनए मुनव्वरा हिजरत से पहले वापस मक्कए मुकर्रमा लौट आए, इन लौटने वालों में येह ख़ुश नसीब ह़सीन नौजवान भी था।

## मदीनए मुनव्वरा का पहला मुबल्लिग़

कुफ़्फ़ारे मक्का के रोज़ बरोज़ बढ़ते हुवे ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर मुसलमान एक ऐसी सर ज़मीन की ज़रूरत शिद्दत से मह़सूस कर रहे थे जो कुफ़्फ़ारे मक्का की रेशा दवानियों (फ़ितना अंगेज़ियों) से न सिर्फ़ तमाम मुसलमानों के लिये एक मह़फ़ूज़ और मज़बूत़ पनाह गाह का काम दे बल्कि इस्लाम का अव्वलीन मर्कज़ बनने की भी सलाह़िय्यत रखती हो। चुनान्चे, जब उस सर ज़मीन में नूरे इस्लाम की किरनें पहुंचीं कि जिसे अ़न क़रीब **दारुल हिजरत, मदीनतुन्नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मदनी मर्कज़ बनने का शरफ़ ह़ासिल होने वाला था तो वहां के रहने वालों ने बैअ़ते अ़क़बए ऊला के बा'द

[1] .....المواهب اللدنيه، باب هجرته، ج ۱، ص ۱۳۲



www.dawateislami.net

हादिये बर ह़क़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में येह दरख़्वास्त पेश की, कि कोई ऐसा **मुबल्लिग़** उन के हां भेजा जाए जो न सिर्फ़ उन के अ़लाक़े में इस्लाम की दा'वत आ़म करे बल्कि लोगों को क़ुरआने करीम की ता'लीमात से भी आरास्ता करे।

मदीने वालों को चूंकि एक ऐसे बा सलाह़िय्यत **मुबल्लिग़** की ज़रूरत थी :

- .....जो अपनी ख़ुदादाद सलाह़िय्यतों और तक़्वा व परहेज़गारी की बदौलत इन्तिहाई कम अ़र्से में इस्लामी इन्क़िलाब बरपा कर दे।
- .....जिस की ज़बान की शीरीनी और किरदार का ह़ुस्न ग़ैर मुस्लिमों के पथ्थर दिलों को पिघला दे।
- .....जो कुफ़्फ़ार के मुंह से निकले हुवे तुर्श और ज़हरीले तीरों का जवाब इस त़रह़ मुस्कुराते होटों से दे कि बोले तो रस घोले।
- .....जिस की निगाहों में दुन्यावी मालो मताअ़ की ह़ैसिय्यत घास के तिनके के बराबर भी न हो।
- .....जो आज़माइश की भट्टी से कुन्दन बन कर निकला हो।
- .....जिस का ओढ़ना बिछौना सिर्फ़ और सिर्फ़ इ़श्क़े मुस्त़फ़ा हो।
- .....जो दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदीनए मुनव्वरा में जल्वा गरी से पहले जांबाज़ों का एक ऐसा हर अव्वल दस्ता तय्यार करे जिस के फ़लक शिगाफ़ ना'रे से कुफ़्फ़ार के ऐवानों में ज़लज़ला बरपा हो जाए।



www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे नबुव्वत ने इस अ़ज़ीम मिशन के लिये अपने जिस जां निसार का इन्तिख़ाब किया वोह बनू अ़ब्दुद्दार का वोही ह़सीन नौजवान था[1] जिस ने अपने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में ऐ़शो इ़शरत की ज़िन्दगी को ठुकरा दिया था।

## येह मुन्तख़ब नौजवान कौन था ?

क्या आप जानते हैं कि निगाहे मुस्त़फ़ा को भा जाने वाला येह नौजवान कौन था ? तो जान लीजिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ातिर सोने की सेज को ठुकराने वाले इस ख़ुश नसीब नौजवान को आज सारी दुन्या **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के नाम से जानती व पहचानती है। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का शुमार उन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने सब से पहले इस्लाम क़बूल किया और **अस्साबिकु नल अव्वलून** (या'नी सबक़त ले जाने वाले सब से पहले मुसलमान होने) का लक़ब पाया।[2]

---

[1] .....معرفة الصحابة، الرقم ۲۷۲۴، مصعب بن عمير، ج ۴، ص ۲۵۷

[2] .....اسد الغابة، الرقم ۴۹۲۹، مصعب بن عمير، ج ۵، ص ۱۹۰



www.dawateislami.net

## ह़सब व नसब

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब येह है : **मुस्अ़ब बिन उ़मैर बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन अ़ब्दुद्दार बिन कुसय्य बिन किलाब बिन मुर्रह अल क़रशी अल अ़ब्दरी** । इस लिह़ाज़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसब में दोहरी निस्बत ह़ासिल है । पहली येह कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ख़ानदान **बनी अ़ब्दुद्दार** से तअ़ल्लुक़ रखते हैं । इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरवरे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वालिदए माजिदा की जानिब से चौथी पुश्त में जा मिलते हैं और दूसरी निस्बत येह ह़ासिल है कि वालिदे माजिद की जानिब से पांचवीं पुश्त में **कुसय्य बिन किलाब बिन मुर्रह** पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब मुबारक से जा मिलता है ।

## अज़्वाज व अवलाद

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एक निस्बत येह भी ह़ासिल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़मना बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا शहनशाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब की बेटी



www.dawateislami.net

और उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन हैं। और इन से आप की ज़ैनब नामी एक ही बेटी पैदा हुई।[1]

## बत़ौरे मुबल्लिग़ इन्तिख़ाब

जिस सर ज़मीन को अ़न क़रीब **दारुल हिजरत** और **मदीनतुन्नबी** बनने का शरफ़ ह़ासिल होने के साथ साथ मर्कज़े इस्लाम बनना था। वहां ज़रूरत इस अम्र की थी कि उस सर ज़मीन पर इस्लाम की दा'वत इस मुनज़्ज़म अन्दाज़ में आ़म की जाए कि जब मोह़सिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने जां निसारों के साथ वहां जल्वा अफ़रोज़ हों तो न सिर्फ़ इस सर ज़मीन पर कुफ़्रो शिर्क के असरात मिट चुके हों बल्कि हर त़रफ़ तौह़ीदो रिसालत के परचम लहरा रहे हों। चुनान्चे, इन तमाम मक़ासिद के ह़ुसूल के लिये सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत से जलीलुल क़द्र, अ़ज़ीमुल मर्तबत और जहां दीदा व उ़म्र रसीदा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जो इन्तिख़ाब फ़रमाया वोह कई वुजूहात की बिना पर हर त़रह़ मौज़ूं व मुनासिब था।

---

[1] ……الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج ۳، ص ۸۶

تاریخ مدینہ دمشق، ج ۴۳، ص ۵۰۷



www.dawateislami.net

## वुजूहात

....आप का तअ़ल्लुक़ जिस ख़ानदान से था वोह पूरे अ़रब में अ़लम बरदारे कुरैश होने की हैसिय्यत से अपनी एक मख़्सूस पहचान रखता था। गोया सरवरे दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप का इन्तिख़ाब इस लिये फ़रमाया कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ आवरी से पहले मदीने के हर घर में इस्लाम का परचम लहरा दें।

....अहले मदीना को किसी ऐसे **मुबल्लिग़** की ज़रूरत थी जिस पर औस व ख़ज़रज के तमाम लोग मुत्तफ़िक़ हो जाएं और ऐसा इसी सूरत में मुमकिन था कि वोह ह़सब व नसब के ए'तिबार से आ'ला हो और बिला शुबा ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इस मे'यार पर पूरा उतरते थे।

....इस्लाम की दा'वत आ़म करने वाले के लिये ज़रूरी था कि वोह ख़ुश अख़्लाक़, बुर्दबार, साह़िबे ह़िक्मत और सब्र करने वाला हो। अगर पहली मरतबा नेकी की दा'वत कार आमद न हो तो दूसरी मरतबा पेश करे और हर सूरत में नर्मी से ही काम ले क्यूंकि जिसे नेकी की दा'वत दी जाएगी वोह नफ़्सो शैत़ान की क़ैद में होगा। पस **मुबल्लिग़** को चाहिये कि हर



www.dawateislami.net

सूरत में उस के साथ नर्मी का बरताव इख़्तियार करे यहां तक कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से नफ़्सो शैतान पर ग़ालिब आ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो जाए। और येह तमाम अवसाफ़ हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में पाए जाते थे, क्यूंकि कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम की भट्टी ने ज़मानए जहालत के हर क़िस्म के मैल कुचैल को इन से दूर कर के इन्हें कुन्दन बना दिया था।

...दूसरे बहुत से जलीलुल क़द्र सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की मौजूदगी के बा वुजूद मोहसिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे इन्तिख़ाब के हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ठहरने की एक वजह येह भी थी कि दियारे ग़ैर में तब्लीगे़ दीन के लिये जिन मुश्किलात का सामना मुमकिन था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से नबर्द आज़मा होने का ब ख़ूबी तजरिबा रखते थे जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिजरते हबशा के दौरान अपने वत़न से दूर रह कर ह़ासिल किया था।

...अहले मदीना के पास जाने वाला **मुबल्लिग़** चूंकि ऐसा होना चाहिये था जो इल्म वाला होने के साथ साथ इल्म पर अमल करने वाला भी हो। या'नी वोह नेकियों पर कमर बस्ता होने के साथ साथ बुराइयों से बचने वाला भी हो



www.dawateislami.net

ताकि लोग जब नेकी की दा'वत देने वाले को बा अ़मल देखें तो उस की पैरवी करते हुवे बुराइयों को तर्क करने में जल्दी करें (क्यूंकि नेकी की दा'वत देने से मक़सूद बुराई को मिटाना और भलाई को फैलाना है) और अगर वोह ख़ुद ही बे अ़मल होगा तो लोग उस की बात को कोई अहम्मिय्यत नहीं देंगे और ब दस्तूर बुराइयों पर क़ाइम रहेंगे । लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस मे'यार पर भी पूरा उतरते थे क्यूंकि आप का शुमार उन लोगों में होता था जिन्हों ने **रिज़ाए रब्बुल अनाम** के ह़ुसूल की ख़ातिर अपना सब कुछ कुरबान कर दिया था । नीज़ आप को इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने का बहुत शौक़ था जिस की वजह से आप को कुरआने करीम की बहुत सी आयाते मुक़द्दसा भी ज़बानी याद हो चुकी थीं ।

....**मुबल्लिग़** के लिये चूंकि येह भी ज़रूरी था कि मालो दौलत की चमक दमक उस के सामने कोई वक़्अ़त न रखती हो, ताकि जिस को दा'वत दे न तो उस के माल में लालच करे और न ही उस की ख़ुशामद व चापलूसी करे । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर निगाहे इन्तिख़ाब ठहरने की एक बड़ी वजह येह भी थी कि मालो दौलत की आप की निगाहों में कोई वक़्अ़त न थी क्यूंकि जब



www.dawateislami.net

आप की निगाहों में मां बाप की बे शुमार दौलत की कोई ह़ैसिय्यत न थी तो किसी दूसरे के माल की क्या परवाह करते ?

....**मुबल्लिग़** को चूंकि नेकी की दा'वत देने और नसीह़त करने में काफ़ी मुश्किलात पेश आ सकती थीं चुनान्चे, उस का जुरअत मन्द होना भी ज़रूरी था और इस ए'तिबार से भी ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुनासिब थे कि बहादुरी व जुरअत मन्दी आप की ख़ानदानी मीरास थी।

*तेरी निस्बत ने संवारा मेरा अन्दाज़े ह़यात*
*मैं अगर तेरा न होता सगे दुन्या होता*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**अल ग़रज़** एक **मुबल्लिग़** को जिन अवसाफ़े ह़मीदा से मुत्तसिफ़ होना चाहिये था वोह तमाम ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात में बदरजए अतम पाए जाते थे।

चुनान्चे, आइये अब येह देखते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार के इस इन्तिख़ाब की लाज किस त़रह़ निभाई।

## इन्तिख़ाब की लाज

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब अपने किसी जां निसार को किसी काम के लिये मुन्तख़ब फ़रमाते तो वोह उस काम को पायए तक्मील तक



www.dawateislami.net

पहुंचाना अपनी सआ़दत समझता, लिहाज़ा येही वजह है कि जब दूसरे बहुत से जलीलुल क़द्र सहाबए किराम की मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिख़ाब हुवा तो वोह अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर लब्बैक कहते हुवे फ़ौरन सूए मदीना चल दिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **11** नबवी ब मुत़ाबिक़ सि. **620** ई. को मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और **12** नबवी ब मुत़ाबिक़ सि. **621** ई, या'नी सिर्फ़ **12** माह के क़लील अ़र्से में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस अह़सन अन्दाज़ में इस्लाम की दा'वत आ़म की, कि मदीनए मुनव्वरा का कूचा कूचा और गली गली ज़िक्रे ख़ुदा व ज़िक्रे मुस्त़फ़ा के अन्वार से जग-मगाने लगा। हर त़रफ़ दीने इस्लाम के चर्चे फैल गए। बच्चा हो या जवान हर एक के दिल में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां हो गई। फिर ह़ज के मौसिम में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **70** अन्सार का एक मदनी क़ाफ़िला ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और इस त़रह़ बैअ़ते अ़क़बए सानिया में अन्सारे मदीना के शुरकाए क़ाफ़िला को दीदारे मुस्त़फ़ा की दौलत पा कर सह़ाबी होने का शरफ़ क्या मिला गोया इन्हें दो जहानों की दौलत मिल गई।[1]

---

[1]……الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج ۳، ص ۸۸



www.dawateislami.net

*ज़हे मुक़द्दर हुज़ूरे हक़ से सलाम आया पयाम आया*
*झुकाओ नज़रें बिछाओ पलकें अदब का आ'ला मक़ाम आया*
*येह कौन सर से कफ़न लपेटे चला है उल्फ़त के रास्ते पर*
*फ़िरिश्ते हैरत से तक रहे हैं येह कौन ज़ी एहतिराम आया*
*फ़ज़ा में लब्बैक की सदाएं ज़ फ़र्श ता अ़र्श गुंजती हैं*
*हर एक क़ुरबान हो रहा है ज़बां पे येह किस का नाम आया*

येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या वोह थे जिन्हों ने मदनी क़ाफ़िले की शक्ल में बारगाहे नबुव्वत में हाज़िरी का शरफ़ हासिल कर लिया मगर येह अपने पीछे बहुत सों को दीदारे मुस्तफ़ा में तड़पता छोड़ आए थे। किसी ने इन के जज़बात की क्या ख़ूब तर्जुमानी की है :

*येह कहना आक़ा बहुत से आ़शिक़ तड़पते से छोड़ आया हूं मैं*
*बुलावे के मुन्तज़िर हैं लेकिन न सुब्ह आया न शाम आया*

पस हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिख़ाब की लाज रखी और बारह माह के क़लील अ़र्से में नेकी की दा'वत की वोह धूमें मचाईं जो रहती दुन्या तक आने वाले मुबल्लिग़ीन के लिये मश्अ़ले राह की हैसिय्यत रखती हैं। चुनान्चे,

## आप की 12 माह की कारकर्दगी

**अत्तबक़ातुल कुब्रा** में है कि जब हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **औस व ख़ज़रज** के इन सत्तर अफ़राद पर मुश्तमिल हाजियों के क़ाफ़िले के हमराह मक्कए



www.dawateislami.net

मुकर्रमा पहुंचे जिन्हों ने बा'द में दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़ते अ़क़बए सानिया का शरफ़ ह़ासिल किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर जाने के बजाए सब से पहले शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे ताकि दीदार की दौलत से फ़ैज़याब होने के साथ साथ अपनी बारह माह की कारकर्दगी भी पेश कर सकें। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न सिर्फ़ अन्सारे मदीना के तेज़ी से इस्लाम क़बूल करने के मुतअ़ल्लिक़ तमाम तफ़्सीलात से मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आगाह किया बल्कि येह भी बताया कि वोह किस क़दर बेताबी से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की राह देख रहे हैं। मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने जांनिसार की इस बेहतरीन कारकर्दगी पर ह़द दरजा ख़ुशी व मसर्रत का इज़्हार फ़रमाया और इन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई व दिलदारी भी फ़रमाई।(1)

## दीदारे मुस्त़फ़ा की तड़प

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अभी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ही थे कि किसी ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा को आप की मक्कए मुकर्रमा आमद के मुतअ़ल्लिक़ आगाह कर दिया, मां का चेहरा अपने लाल की

---

1 ......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج۳، ص ۸۸



www.dawateislami.net

आमद के मुतअ़ल्लिक़ सुन कर खिल उठा और फ़ौरन बेटे को येह पैग़ाम भेजा कि ऐ नाफ़रमान ! तुझे क्या हो गया है कि तू सब से पहले मेरे पास आने के बजाए किसी और के पास चला गया है ? क्या मेरी शफ़्क़तें, मेरी मेहरबानियां सब कुछ भूल गया है ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पैग़ाम लाने वाले से फ़रमाया कि मेरी मां से कह देना : ऐ मेरी मां ! याद रख ! जिस शहर में सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हों और मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार की दौलत से फ़ैज़याब होने और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी बातें सुनने से पहले किसी और के पास जाऊं ऐसा कभी नहीं हो सकता ।(1)

## मां से आख़िरी मुलाक़ात

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपनी तमाम कारगुज़ारी पेश करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इजाज़त ले कर जब अपनी मां के पास गए तो उस ने सब से पहला सुवाल ही येह किया : क्या अभी तक तू अपने आबाई दीन से बर-गश्ता (بَر۔گَش۔تہ मुन्हरिफ़ या'नी फिरा हुवा) है ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मेरा अपने आबाई दीन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं बल्कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीने ह़नीफ़ या'नी इस्लाम

---

1 ...... الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج ۳، ص ۸۸



www.dawateislami.net

पर हूं। मां बोली : क्या तुझे ज़र्रा भर मेरी मह़ब्बत का एह़सास नहीं कि मैं तेरी जुदाई बरदाश्त नहीं कर सकती और तेरी याद में हर लम्ह़ा तड़पा व रोया करती हूं और तू है कि कभी ह़बशा चला जाता है और कभी यसरब[1] (मदीनए त़य्यिबा)। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ मेरी मां ! तुम सब घर वाले मुझे अपने प्यार का वासित़ा दे कर दीने इस्लाम छोड़ने के लिये वर्ग़लाना चाहते हो मगर याद रखो मैं अपने दीन पर ही क़ाइम रहूंगा। मां ने बेटे का येह अ़ज़्म देखा तो इन्हें फिर से घर में क़ैद करने के मुतअ़ल्लिक़ सोचने लगी इधर ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मां के इरादों को भांप गए और फ़रमाया : ऐ मेरी मां ! अगर तू ने मुझे क़ैद करने के मुतअ़ल्लिक़ सोचा तो देख लेना कि जो भी मेरे नज़दीक आएगा मैं उस की जान लेने से भी दरेग़ नहीं करूंगा। मां अपने बेटे को ब ख़ूबी जानती थी कि इस का येह बेटा जब कोई इरादा कर लेता है तो कभी पीछे नहीं हटता। चुनान्चे, इन की येह बेबाकी देख कर बिल्कुल मायूस हो गई और बोली : जा यहां से चला जा, तेरा इस घर से कोई वासित़ा नहीं। येह कहा और फूट फूट कर रोने लगी।

---

①.....मदीनए मुनव्वरा का पुराना नाम यसरब है लेकिन अब मदीना त़य्यिबा को यसरब कहना ना जाइज़ व ममनूअ़ व गुनाह है और कहने वाला गुनहगार। (फ़तावा रज़विय्या, जि.21, स.116)



www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि एक मन्झे हुवे मुबल्लिग़ थे चुनान्चे, मां को रोता देख कर भी इन के क़दमों में लड़ खड़ाहट पैदा न हुई बल्कि अपनी मां को कुफ़्र के अन्धेरों से इस्लाम के उजालों में लाने के लिये इस पर **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुवे कुछ यूं इस्लाम की दा'वत पेश की : "ऐ मेरी मां ! येह न समझना कि मुझे तुझ से महब्बत नहीं, मैं तुझ से बहुत प्यार करता हूं मगर मेरे और तुम्हारे दरमियान कुफ़्र की दीवार हाइल है, ऐ काश ! तू इस दीवार को गिरा कर येह गवाही दे दे कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं।" मगर सुब्हे नूर का उजाला देखना मां की क़िस्मत में न था चुनान्चे, बोली : सितारों की क़सम ! मैं कभी तेरे दीन में दाख़िल न होऊंगी कि मेरे लोग मेरी ही राए की तज़लील करने लगें और मुझे कम अ़क़्ल जानें बल्कि मैं तुझ से और तेरे दीन से हमेशा के लिये मुंह मोड़ लूंगी और अपने ही दीन पर क़ाइम रहूंगी। मां की येह बात सुन कर हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिल बरदाश्ता हो गए और हमेशा के लिये इस घर से नाता तोड़ कर चल दिये।[1]

इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़िल हज, मुहर्रम और सफ़र तीन माह मोहसिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारे और माहे रबीउ़न्नूर

---

[1] ……الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج ۳، ص ۸۸



www.dawateislami.net

में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजरत से बारह दिन क़ब्ल मदीनए मुनव्वरा रवाना हुवे ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद पर भरपूर इस्तिक़बाल की तय्यारियां फ़रमा सकें।[1] तारीख़ गवाह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदीनए मुनव्वरा आमद पर अहले मदीना ने जिस शानदार त़रीक़े से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्तिक़बाल किया वोह मोह़ताजे बयान नहीं। बेशक अहले मदीना के दिलों में इश्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां करने में ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उमैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक अहम किरदार अदा किया था।

## ह़ज़रते सय्यिदुना मुस़अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की तब्लीग़ी सरगर्मियों पर एक नज़र

### तब्लीग़ की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत

ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अनमोल ने'मत है जिस को बाक़ी रखने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को बे शुमार लवाज़िमाते ह़यात (ज़रूरियाते ज़िन्दगी) से नवाज़ा और चूंकि इन्सान जिस्म व रूह़ का एक ह़सीन मुरक्कब है, लिहाज़ा इन दोनों अ़नासिर की देख भाल और तन्दुरुस्ती व सिह़्ह़त को बर क़रार

[1] .....الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵ مصعب الخیر، ج۳، ص ۸۸



www.dawateislami.net

रखने के लिये इन की ज़रूरियात के मुत़ाबिक़ इन्हें बे शुमार ने'मतों से नवाज़ा गया । जिस्म ज़ाहिर था तो इस के लिये ने'मतें भी ज़ाहिरी व माद्दी अ़त़ा फ़रमाई गईं और रूह़ एक बात़िनी शै थी तो इस के लिये ने'मतें भी बात़िनी ही अ़त़ा फ़रमाई गईं । इन्सानी जिस्म रूह़ के लिये एक क़ैद ख़ाने की त़रह़ था, आग, पानी, हवा और मिट्टी से बनने वाले जिस्म की बक़ा व सिह़्ह़त के लवाज़िमात व ज़रूरियात भी इन्ही अश्या पर मुन्ह़सिर थे मगर येह बहुत जल्द दुन्यावी भूल भुलय्यों में खो गया और दुन्यावी आलाइशों का शिकार होने की वजह से रूह़ से ग़ाफ़िल हो कर ब तदरीज रह़मते ख़ुदावन्दी से दूर होता चला गया और इस पर आहिस्ता आहिस्ता गुमराही व ज़लालत की दबीज़ (मोटी) तहें चढ़ने लगीं चुनान्चे, इस जिस्म व रूह़ के रिश्ते को उस्तुवार रखने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने कुछ ख़ास बन्दे या'नी अम्बिया व रुसुल भेजे ताकि वोह इस ख़ाकी पैकर (जिस्म) को जिस्म व रूह़ की त़हारत व पाकीज़गी के उसूल व क़वानीन सिखाएं, इसे ज़िन्दगी की ह़क़ीक़त से रू शनास कराएं और जीने का अस्ली ढंग बताएं ताकि रोज़े क़ियामत इन्सान येह उ़ज़्र न पेश कर सके कि इसे पाकीज़गी व त़हारत और राहे ह़क़ व सदाक़त का इ़ल्म न था जिस की वजह से येह आलाइशे दुन्या का शिकार हो कर गुमराही व ज़लालत की वादियों में भटकता रहा । जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :



www.dawateislami.net

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ (پ٦، النساء:١٦٥)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* रसूल ख़ुश ख़बरी देते और डर सुनाते कि रसूलों के बा'द **अल्लाह** के यहां लोगों को कोई उ़ज़्र न रहे ।

रसूलों और अम्बियाए किराम का येह सिलसिला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मबऊ़स होने तक जारी रहा । बिल आख़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत को वोह मुकम्मल निज़ामे ह़यात अ़त़ा फ़रमाया जो न सिर्फ़ लोगों के मिज़ाज और ज़रूरियात के लिये काफ़ी व शाफ़ी था बल्कि इसे रहती दुन्या तक क़ाइमो दाइम भी रहना था ।

## नेकी की दा'वत

पूरी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ और उन तक नेकी की दा'वत पहुंचाने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत को हु़क्म दिया कि "जिस दीन को मेरे मह़बूब ने तुम तक पहुंचाया है अब इसे दूसरों तक पहुंचाना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है ।" चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **616** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**नेकी की दा'वत**" सफ़ह़ा **30** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि पारह **4** सूरए आले इमरान की आयत नम्बर **104** में इरशाद होता है :


www.dawateislami.net

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۰۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।*

## हर एक अपने अपने मन्सब के मुत़ाबिक़ नेकी की दा'वत दे

**मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **तफ़्सीरे नईमी** में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : **ऐ मुसलमानो !** तुम सब को ऐसा गुरौह होना चाहिये या ऐसी तन्ज़ीम बनो या ऐसी तन्ज़ीम बन कर रहो जो तमाम टेढ़े (या'नी बिगड़े हुवे) लोगों को ख़ैर (या'नी नेकी) की दा'वत दे, काफ़िरों को ईमान की, फ़ासिक़ों को तक़्वे की, ग़ाफ़िलों को बेदारी की, जाहिलों को इल्म व मा'रिफ़त की, ख़ुश्क मिज़ाजों को लज़्ज़ते इ़श्क़ की, सोने वालों को बेदारी की और अच्छी बातों, अच्छे अ़क़ीदों, अच्छे अ़मलों का ज़बानी, क़लमी, अ़मली, क़ुव्वत से, नर्मी से (और ह़ाकिम अपने मह़कूम व मा तह़्त को) गर्मी से हुक्म दे और बुरी बातों, बुरे अ़क़ीदों, बुरे कामों, बुरे ख़यालात से लोगों को (अपने अपने मन्सब के मुत़ाबिक़) ज़बान, दिल, अ़मल, क़लम, तल्वार से रोके। **मज़ीद फ़रमाते हैं :** सारे मुसलमान मुबल्लिग़ हैं, सब पर ही फ़र्ज़ है कि लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें।[1] कुछ आगे चल कर ह़ज़रते क़िब्ला

---

①.....तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 72, बित्तग़य्युर।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बुख़ारी शरीफ़ की येह ह़दीसे पाक नक़्ल की है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَةً** या'नी मेरी त़रफ़ से पहुंचा दो अगर्चे एक ही आयत हो।[1]

***मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचा दूं***

***हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही***

## अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जिस का फ़ाइदा दूसरों को पहुंचे

**मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मजीद फ़रमाते हैं : "इस्लाम में तब्लीग़ बड़ी अहम इबादत है कि तमाम इबादतों का फ़ाइदा ख़ुद अपने को (या'नी अपनी ज़ात को) होता है मगर तब्लीग़ का फ़ाइदा दूसरों को भी। "लाज़िम" (या'नी सिर्फ़ अपनी ज़ात को फ़ाइदा पहुंचाने वाले अ़मल) से "मुतअ़द्दी" (ऐसा अ़मल जो दूसरों को भी फ़ाइदा दे वोह) अफ़्ज़ल है। (रिवायत में है कि) किसी ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा कि बेहतरीन बन्दा कौन है ? फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला से डरने वाला, सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) करने वाला, अच्छी बातें बताने वाला और बुराइयों से रोकने वाला।[2]

[1]...... بُخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ما ذکر عن بنی اسرائیل، الحدیث: ۳۴۶۱، ج۲، ص۴۶۲

[2]...... الزھد الکبیر للبیھقی، الحدیث: ۸۷۷، ص۳۲۷



www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन (बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی) फ़रमाते हैं कि "जो अच्छी बातों का हुक्म दे, बुराइयों से रोके वोह **अल्लाह** तआ़ला का भी ख़लीफ़ा है, उस के रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का भी और उस की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) का भी।" (ह़दीसे पाक में है) अगर मुसलमानों ने तब्लीग़ छोड़ दी तो उन पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत़ होंगे और उन की दुआ़एं क़बूल न होंगी।[1]

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो ! भलाई का हुक्म दो, बुराई से मन्अ़ करो तुम्हारी ज़िन्दगी बख़ैर गुज़रेगी। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि तब्लीग़ बेहतरीन जिहाद है।[2] जैसे तब्लीग़ करना बेहतरीन इ़बादत है ऐसे ही तब्लीग़ छोड़ देना बद तरीन जुर्म और छोड़ने वाला ज़लीलो ख़्वार।[3]

## नेकी की दा'वत के बुन्यादी अरकान

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नेकी की दा'वत के तीन बुन्यादी अरकान हैं :

(1) **दाई :** या'नी दा'वत देने वाला कौन है ?

(2) **मदऊ़ :** किस को दा'वत दी जा रही है ?

(3) **दा'वत :** या'नी वोह दा'वत कैसी है ?

---

[1] ……روح المعانی، ج۴، ص۳۲۶

[2] ……تفسیرِ کبیر، ج۳، ص۳۱۶

③ तफ़्सीरे नईमी, जिल्द. 4 स. 72, बित्तग़य्युर



www.dawateislami.net

इन तीनों अरकान में सब से ज़ियादा अहम्मिय्यत दाई की है क्यूंकि नेकी की दा'वत के अल्फ़ाज़ ख़्वाह कितने ही पुर कशिश क्यूं न हों अगर दा'वत देने वाले का त़रीक़े दा'वत दुरुस्त न हो या वोह जिस को दा'वत दे रहा है उस की सूझ बूझ के मुत़ाबिक़ अपनी बात समझाने की क़ुदरत न रखता हो तो उस की कामयाबी का कोई इमकान नहीं। लिहाज़ा मुबल्लिग़ व दाई की कामयाबी इसी में है कि हर कोई पुकार उठे कि इस ने नेकी की दा'वत देने का ह़क़ अदा कर दिया। मगर इन अरकान की तफ़्सील जानने से पहले आइये देखते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस त़रह़ इस्लाम की दा'वत आ़म की ताकि इन की सीरते त़य्यिबा की रोशनी में मुबल्लिग़ीन मज़्कूरा अरकान की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत वग़ैरा जान कर दुन्या भर में नेकी की दा'वत की धूमें मचा सकें। चुनान्चे,

## इनफ़िरादी कोशिश

**मरवी** है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा पहुंचे थे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **क़बीलए बनी ग़नम** के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना **अस्अ़द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां क़ियाम फ़रमाया और उन की मुआ़वनत से नेकी की दा'वत आ़म करने लगे।



www.dawateislami.net

एक दिन ह़ज़रते **सय्यिदुना अस्अ़द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ **क़बीलए बनू अ़ब्दुल अशहल और बनू ज़फ़र** के चन्द अफ़राद पर **इनफ़िरादी कोशिश** करने के लिये घर से निकले और **क़बीलए बनी ज़फ़र** के एक बाग़ में दाख़िल हो कर **मरक़** नामी कूंएं के पास जा कर बैठ गए। इन्हें देख कर नौ मुस्लिम इन के गिर्द जम्अ़ हो गए, इन सब को इस त़रह़ जम्अ़ देख कर चन्द ऐसे लोग भी बैठ गए जो अभी तक मुसलमान नहीं हुवे थे कि देखें क्या हो रहा है ? ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही प्यारे अन्दाज़ में नेकी की दा'वत पेश की, सभी ख़ामोश और मुतवज्जेह हो कर सुनने लगे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अन्दाज़े बयान से मुतअस्सिर होने लगे।

**सा'द बिन मुआ़ज़** और **उसैद बिन ह़ुज़ैर** कबीलए **बनी अ़ब्दुल अशहल** के चोटी के सरदार थे, येह अभी दामने इस्लाम से वाबस्ता न हुवे थे। जब इन्हें येह बात मा'लूम हुई कि ह़ज़रते **अस्अ़द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक मक्की नौजवान हमारे क़बीले में दाख़िल हुवा है और हमारे लोगों को इस्लाम की दा'वत दे कर अपने मज़हब से हटा रहा है तो **सा'द बिन मुआ़ज़** ने **उसैद बिन ह़ुज़ैर** से फ़रमाया कि जाएं और उस नौजवान को समझाएं कि हमारा शहर छोड़ कर चला जाए, क्यूंकि आप जानते हैं कि **अस्अ़द बिन ज़ुरारह** मेरे ख़ाला ज़ाद



www.dawateislami.net

हैं, अगर वोह साथ न होते तो मैं ख़ुद ऐसा करता। चुनान्चे, **बनी अ़ब्दुल अशहल** के सरदार **उसैद बिन हुज़ैर** ने अपना नेज़ा लिया और कूंएं की त़रफ़ चल दिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अस्अ़द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन को दूर से ही आते हुवे देख लिया और ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "येह शख़्स अपनी क़ौम का सरदार है, जब क़रीब आए तो इसे अपने दिल नशीन अन्दाज़ में नेकी की दा'वत पेश कीजियेगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ठीक है, अगर पास बैठ गए तो मैं ज़रूर नेकी की दा'वत पेश करूंगा।"

इतनी देर में **उसैद बिन हुज़ैर** इन के पास पहुंच गए और आते ही कहना शुरूअ़ कर दिया : "तुम दोनों यहां किस लिये आए हो ? तुम्हें हमारे कमज़ोरों को वर्ग़लाने और अपने दीन से बहकाने की इजाज़त किस ने दी ? अगर जान प्यारी है तो इसी वक़्त यहां से चले जाओ।" इतना सख़्त कलाम सुन कर नेकी की दा'वत के इस अ़ज़ीम **मुबल्लिग़** ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने नूरे ईमान से चमकते हुवे चेहरे के साथ **उसैद बिन हुज़ैर** की त़रफ़ देखा और निहायत ही नर्म और मीठे लहजे में फ़रमाया : "मेरी एक बात सुन लीजिये ! क्या आप को ख़ैर व भलाई चाहिये ?" **उसैद बिन हुज़ैर** तो लड़ने आए थे, मगर इस क़दर नर्म लहजा सुन कर पिघल गए और पूछा कि ख़ैर



www.dawateislami.net

व भलाई से तुम्हारी क्या मुराद है ? ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरे पास बैठ कर मेरी बात सुन लीजिये ! अगर समझ में आ जाए तो इसे मान लीजियेगा और अगर पसन्द न आए तो हम आप को मजबूर नहीं करेंगे बल्कि चले जाएंगे।" **उसैद बिन हुज़ैर** चूंकि बड़े अ़क़्लमन्द थे लिहाज़ा इन्हों ने (सोचा अगर इस त़रह़ मुआ़मला ह़ल हो सकता है तो ज़ियादा बेहतर है, इस लिये) कहा : "येह सह़ीह़ है" इस के साथ ही अपना नेज़ा ज़मीन पर गाड़ कर उन दोनों के पास बैठ गए।

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मीठे मीठे और प्यारे प्यारे ख़ूब सूरत अन्दाज़ में नेकी की दा'वत पेश करते हुवे इस्लाम की ख़ूबियां, फ़ज़ाइल और बरकतें ऐसे दिल पज़ीर लहजे में बयान कीं, कि वोह आहिस्ता आहिस्ता तासीर के तीर बन कर उन के दिल में पैवस्त होने लगीं, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुरआने मजीद की कुछ आयात की तिलावत की तो **उसैद बिन हुज़ैर** के चेहरे पर क़बूले इस्लाम पर आमादगी के आसार नुमूदार होने लगे, बिल आख़िर पुकार उठे कि आप की बातें क्या ख़ूब हैं ! किस क़दर दिल नशीन और दिल गुदाज़ हैं ! जिस कलाम की आप तिलावत करते हैं वोह बहुत अ़ज़ीम है। फिर इन्हों ने झुकी हुई नज़रों से बा अदब अन्दाज़ में पूछा : इस्लाम में दाख़िल होने का त़रीक़ा क्या है ? चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **उसैद बिन हुज़ैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को



www.dawateislami.net

दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने का त़रीक़ा बताया और इस त़रह़ वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बुर्दबारी और मीठे अन्दाज़ में पेश की गई नेकी की दा'वत को सुन कर मुसलमान हो गए।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना **उसैद बिन हुज़ैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान हो गए तो कहने लगे : "मेरे पीछे एक आदमी और है जिस का नाम सा'द बिन मुआ़ज़ है, अगर उस ने आप की बात मान ली तो मेरी सारी क़ौम आप की बात मान लेगी, मैं उसे अभी आप के पास भेजता हूं।" येह कह कर आप वहां से चल दिये और सा'द बिन मुआ़ज़ के पास जा पहुंचे और उन्हें नेकी की दा'वत सुनने के लिये आख़िर किसी त़रह़ आमादा कर ही लिया और बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी दिल नशीन और मीठे अन्दाज़ में पेश की गई नेकी की दा'वत सुन कर मुसलमान हो गए। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी क़ौम के पास गए तो उन से फ़रमाया : "तुम मेरे बारे में क्या राए रखते हो ?" सब ने बयक ज़बान हो कर कहा : "आप हमारे सरदार हैं और आप की राए दुरुस्त और दूर रस होती है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझ पर तुम्हारे मर्दों और औ़रतों से उस वक़्त तक बात करना ह़राम है जब तक तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान नहीं ले आते।" रावी फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! शाम भी न हुई थी कि तमाम मर्द व औ़रत मुसलमान हो चुके थे।"(1)

---

1 ......البدایۃ والنہایۃ، بدء اسلام الانصار، ج ۲، ص ۵۲۷



www.dawateislami.net

## नायाब मदनी फूल

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सब्रो तह़म्मुल, बुर्दबारी और **इनफ़िरादी कोशिश** पर हज़ार जानें कुरबान ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस त़रह़ इस्लाम की दा'वत आ़म की और इस के लिये **इनफ़िरादी कोशिश** का जो अन्दाज़ अपनाया इस में कई मदनी फूल हैं । चुनान्चे, मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा में पाए जाने वाले दरजे ज़ैल **नायाब मदनी फूलों** को अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा लें :

## मुबल्लिग़ व दाई़ को कैसा होना चाहिये ?

### ईमाने कामिल

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते मुबारका से सब से पहला मदनी फूल येह मिलता है कि **ईमान के मर्तबए कमाल पर फ़ाइज़ होने के लिये कुछ भी कुरबान करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिये** । जैसा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम की ख़ातिर वालिदैन की बे पनाह मह़ब्बत व शफ़्क़त को पसे पुश्त डाल कर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने अ़ज़मत निशान को अ़मली त़ौर पर साबित कर दिखाया :



www.dawateislami.net

لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ وَّالِدِہٖ وَوَلَدِہٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ

या'नी तुम में से कोई उस वक़्त तक ईमान के मर्तबए कमाल तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि मैं उसे उस के वालिदैन, अवलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।[1]

## अ़लामाते ईमाने कामिल

हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत की तर्जुमानी हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद सह्ल तुस्तरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के उस क़ौल से क्या ख़ूब होती है जिस में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ईमाने कामिल की अ़लामात बयान फ़रमाई हैं।

चुनान्चे, इमामे अजल्ल शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **386** हि.) ने अपनी किताबे मुस्तत़ाब **क़ूतुल क़ुलूब** में आप का येह क़ौल कुछ यूं नक़्ल फ़रमाया है :

- .....ईमान की अ़लामत महब्बते बारी तआ़ला है।
- .....महब्बते बारी तआ़ला की अ़लामत महब्बते कलामे बारी तआ़ला है।
- .....महब्बते कलामे बारी तआ़ला की अ़लामत महब्बते महबूबे बारी तआ़ला है।
- .....महब्बते महबूबे बारी तआ़ला की अ़लामत इत्तिबाए़ महबूबे बारी तआ़ला है।
- .....और इत्तिबाए़ महबूबे बारी तआ़ला की अ़लामत दुन्या से दूरी है।[2]

---

[1] .....بخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول صلی اللہ علیہ وسلم من الإیمان، الحدیث: ۱۵، ج ۱، ص ۱۷

[2] .....قوت القلوب، ج ۱، ص ۱۰۴



www.dawateislami.net

यूं तो सारे ही सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان द-रख़्शिन्दा सितारों की मानिन्द हैं और सब ही ईमान के मर्तबए कमाल पर फ़ाइज़ थे मगर बा'ज़ की इनफ़िरादी कोशिशों और क़ुरबानियों से ह़ासिल होने वाला दर्स आज के पुर फ़ितन दौर में हमारे लिये सरमायए ह़यात है। ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का शुमार भी उन बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में होता है जिन पर चश्मे फ़लक (आस्मान की आंख) को नाज़ है और ऐसा क्यूंकर न होता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने तन मन धन सब कुछ ह़िफ़ाज़ते ईमान के लिये राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दिया। जब अपने परवर दगार का कलाम उस के मह़बूब की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से सुना तो बह़्रे तौह़ीद में इस त़रह़ ग़ोत़ा ज़न हुवे कि कभी इस से बाहर न निकले। बल्कि हर वक़्त बारगाहे परवर दगार व मह़बूबे किरदिगार पर निगाहें जमाए इस इन्तिज़ार में रहते कि देखें कब कोई अनमोल मोती अ़त़ा होता है। इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ एक एक कर के क़ुरआने मजीद की आयात को मोतियों की त़रह़ अपने दामन में मह़फ़ूज़ करते चले गए और आप का शुमार इल्म की दौलत से माला माल अफ़राद में होने लगा। येही वजह है कि जब अहले मदीना ने दौलते इल्म के ह़ुसूल की ख़्वाहिश का इज़्हार किया तो मुअ़ल्लिमे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस जां निसार सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को इस ए'तिमाद से रवाना फ़रमाया कि येह इस्लाम क़बूल करने



www.dawateislami.net

वाले नौ मुस्लिमों की इस त़रह़ मदनी तर्बिय्यत फ़रमाएंगे कि ज़ाबित़ए ह़यात कुरआने मजीद के अनमोल मदनी फूलों की ख़ुश्बू से उन के दिलो दिमाग़ मुअ़त्त़र हो जाएंगे।

## इख़्लास

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नेकी की दा'वत का मदनी काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ख़ातिर किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इसी ख़ुलूस व लिल्लाहिय्यत का समरा (नतीजा) था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बाने मुबारक से निकले हुवे अल्फ़ाज़ तासीर के तीर बन कर लोगों के दिलों में इस त़रह़ पैवस्त होते गए कि सिर्फ़ दो साल के क़लील अ़र्से में शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद से पहले मदीनए मुनव्वरा के घर घर में इस्लाम का परचम लहराने लगा और जब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद हुई तो तमाम दरो दीवार इन पुर लुत्फ़ सदाओं से गूंज उठे :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ

وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعِ

या'नी वदाअ़ के टीलों से हम पर एक चांद तुलूअ़ हुवा जब तक कोई बुलाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाता रहेगा हम पर उस (चांद) का शुक्र वाजिब है।



www.dawateislami.net

اَیُّهَا الْمَبْعُوْثُ فِیْنَا　　جِئْتَ بِالْاَمْرِ الْمُطَاعِ

اَنْتَ شَرَّفْتَ الْمَدِیْنَةَ　　مَرْحَبًا یَا خَیْرَ دَاعٍ

या'नी ऐ हमारे दरमियान मबऊ़स होने वाली हस्ती ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो दीन लाए हैं वोह इत़ाअ़त के क़ाबिल है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीने को मुशर्रफ़ फ़रमाया। **मरह़बा** ! **ख़ुश आमदीद** ! ऐ बेहतरीन दा'वत देने वाले !

فَلَبِسْنَا ثَوْبَ یَمَنٍ　　بَعْدَ تَلْفِیْقِ الرِّقَاعِ

فَعَلَیْکَ اللّٰهُ صَلّٰی　　مَا سَعٰی لِلّٰهِ سَاعٍ

या'नी हम ने यमनी कपड़े पहने ह़ालांकि इस से पहले पैवन्द जोड़ जोड़ कर पहना करते थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक रह़मतें नाज़िल फ़रमाए जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये कोशिश करने वाले कोशिश करते रहें।

**मुबल्लिग़ीन** को चाहिये कि नेकी की दा'वत आ़म करने में सिर्फ़ और सिर्फ़ रिज़ाए रब्बुल अनाम व ख़ैरुल अनाम عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को पेशे नज़र रखें कि इस से ज़बान में तासीर पैदा होगी। क्यूंकि लोगों के दिख़ावे के लिये दी जाने वाली नेकी की दा'वत में तासीर न होने के सबब इनफ़िरादी कोशिश में नाकामी के साथ साथ सवाबे आख़िरत से मह़रूमी भी हो सकती है। चुनान्चे,



www.dawateislami.net

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِیْ حَرْثِهٖ ۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ⑳ (پ۲۵، الشوریٰ:۲۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं ।*

लिहाज़ा चाहिये कि हमेशा रिज़ाए रब्बुल अनाम को पेशे नज़र रखें और कभी भी दुन्या व दुन्यादारों की ख़ातिर अपनी आख़िरत बरबाद न करें । चुनान्चे,

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुतअ़ल्लिक़ **मन्क़ूल** है कि वोह यहां तक इख़्लास की कोशिश करते कि हमेशा जमाअ़त की सफ़े अव्वल में शामिल होते, एक दिन इत्तिफ़ाक़न आख़िरी सफ़ में खड़े हुवे तो दिल में ख़याल आया कि आज लोग मुझे आख़िरी सफ़ में देख कर क्या कहेंगे ? येह सोच कर दिल ही दिल में शर्मिन्दा हुवे मगर इस के साथ ही फ़ौरन ख़ुद से कहने लगे : "गोया कि मैं ने जितनी नमाज़ें पहली सफ़ में पढ़ीं लोगों के दिखावे के लिये थीं ।" पस इस ख़याल के आते ही **30** साल की नमाज़ें क़ज़ा करना शुरूअ़ कर दीं ।(1)

## रियाकार का अन्जाम

एक त़वील ह़दीसे पाक में है कि बरोज़े क़ियामत एक ऐसा शख़्स बारगाहे ख़ुदावन्दी में लाया जाएगा जिस ने दुन्या में **इल्म**

1 ......کیمیائے سعادت، رکن چہارم، اصل پنجم، ج ۲، ص ۸۷۶



www.dawateislami.net

सीखा सिखाया और **कुरआने करीम** पढ़ा होगा। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा और वोह उन ने'मतों का इक़रार कर लेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "तूने इन ने'मतों के बदले में क्या किया?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं ने इ़ल्म सीखा और सिखाया और तेरे लिये कुरआने करीम पढ़ा।" लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है तू ने इ़ल्म इस लिये सीखा कि तुझे **आ़लिम** कहा जाए और कुरआने करीम इस लिये पढ़ा कि तुझे **क़ारी** कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।" फिर उसे **जहन्नम** में डालने का हुक्म होगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर **जहन्नम** में डाल दिया जाएगा।[1]

## इ़ल्मो अ़मल का पैकर

एक मुबल्लिग़ पर लाज़िम है कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ बा अ़मल आ़लिम हो क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मदीनए मुनव्वरा के मुबल्लिग़ के त़ौर पर इन्तिख़ाब की एक वजह इन का इ़ल्म भी था। येही वजह है कि आप मुक़रिये मदीना (मदीनए मुनव्वरा वालों को कुरआने करीम पढ़ाने वाले) के लक़ब से जाने जाते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्सारे मदीना को कुरआने करीम सिखाने के साथ साथ इस के अह़काम पर अ़मल भी कर के दिखाया करते थे।

---

[1] .....مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قاتل للریاء... الخ، الحدیث: ۱۹۰۵، ص ۱۰۵۵



www.dawateislami.net

## इल्मो अ़मल की अहम्मिय्यत

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** याद रखिये ! इल्म बिग़ैर अ़मल के फ़ाइदा नहीं देता । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحِيْم ने अपने बेटे को वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "**ऐ मेरे लख़्ते जिगर !** जिस त़रह़ खेत **पानी** और **मिट्टी** के बिग़ैर दुरुस्त नहीं हो सकता, इसी त़रह़ ईमान, इल्मो अ़मल के बिग़ैर दुरुस्त नहीं रह सकता ।"[1] और एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इरशाद फ़रमाया : "शैत़ान बा'ज़ अवक़ात तुम से इल्म में सबक़त ले जाता है ।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह इल्म में हम से कैसे बढ़ सकता है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह कहता है इल्म ह़ासिल करो लेकिन इस पर उस वक़्त तक अ़मल मत करो जब तक कि आ़लिम न बन जाओ, इल्म के ह़ुसूल में येही कहता रहता है और अ़मल के सिलसिले में टाल मटोल से काम लेता रहता है यहां तक कि बन्दा इस ह़ाल में मर जाता है कि उस ने कोई अ़मल नहीं किया होता ।"[2]

---

[1] .....قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون، ج ۱، ص ۲۳۴

[2] .....الجامع لاخلاق الراوی للخطیب بغدادی، باب النیة فی طلب الحدیث، الحدیث: ۳۵، ج ۱، ص ۸۹



www.dawateislami.net

**मन्क़ूल** है कि इ़ल्म अ़मल को पुकारता है अगर अ़मल इस की पुकार पर **लब्बैक** (मैं ह़ाज़िर हूं) कहे तो इ़ल्म रुक जाता है वरना कूच कर जाता है।(1)

## बे अ़मली के मुतअ़ल्लिक़ तीन अह़ादीसे मुबारका

﴾1﴿....क़ियामत के दिन एक शख़्स को जहन्नम में डाला जाएगा तो उस के पेट की आंतें निकल पड़ेंगी, वोह इस त़रह़ चक्कर खाएगा जिस त़रह़ गधा चक्की के साथ घूमता है, इस पर तमाम दोज़ख़ी जम्अ़ हो कर कहेंगे : "ऐ फ़ुलां ! तुझे क्या हुवा ? क्या तू लोगों को नेकी की दा'वत नहीं देता था और बुराई से मन्अ़ नहीं करता था ?" वोह कहेगा : "हां ! क्यूं नहीं ! मैं नेकी की दा'वत देता था लेकिन ख़ुद अ़मल नहीं करता था बुराई से रोकता था मगर ख़ुद इस का मुर्तकिब था।"(2)

﴾2﴿....मैं ने लैलतुल इस्रा (لَیْلَۃُ الْاِسْرَاء या'नी मे'राज की रात) ऐसे लोगों को देखा जिन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे तो मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के ख़त़ीब हैं जो लोगों को तो नेकी की दा'वत देते थे मगर अपने आप को भूल जाते थे ह़ालांकि क़ुरआने

---

[1]......تاریخ مدینہ دمشق، ج ۵۲، ص ۲۶

[2]...... مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب عقوبة من یامر بالمعروف ولا یفعله ...... الخ، الحدیث: ۲۹۸۹، ص ۱۵۹۵



www.dawateislami.net

पाक में इस फ़रमाने बारी तआ़ला اَفَلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾ (پ۲۳، یٰسٓ:۶۸) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या समझे नहीं।* की तिलावत किया करते थे।" (1)

﴿3﴾....लोगों को अच्छी बात बताने और ख़ुद को भूल जाने वाले की मिसाल उस चराग़ की सी है जो दूसरों को तो रोशन करता है लेकिन अपने आप को जलाता है।(2)

## नेकी की दा'वत कौन दे ?

**मरवी है** कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मैं चाहता हूं कि नेकी की दा'वत दूं और बुराई से मन्अ़ करूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "क्या तुम (अपनी इस्लाह़ करने में) ह़द्दे कमाल को पहुंच चुके हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "उम्मीद है।" इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम्हें क़ुरआने पाक के तीन हुरूफ़ की वजह से रुस्वा होने का ख़ौफ़ न हो तो येह काम करो।" उस ने अ़र्ज़ की : "वोह हुरूफ़ कौन से हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका :

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ (پ۱، البقرۃ:۴۴)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो ?*

---

[1] .....الترغیب والترھیب، کتاب الحدود وغیرھا، الترھیب من ان یامر بمعروف.....الخ، الحدیث:۳۵۴۸، ج۳، ص۱۸۷

[2] .....المرجع السابق، الحدیث:۳۵۵۳، ج۳، ص۱۸۸



www.dawateislami.net

तिलावत करने के बा'द उस से पूछा : "क्या तुम्हें इस आयत का हुक्म मा'लूम है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" फिर उस ने अ़र्ज़ की : "दूसरा ह़र्फ़ कौन सा है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝۲ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝۳

(پ۲۸، الصف:۲،۳)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते । कैसी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वोह बात कि वोह कहो जो न करो ।*

फिर फ़रमाया : "इस आयत का हुक्म जानते हो ?" अ़र्ज़ की : "नहीं।" फिर उस ने अ़र्ज़ की : "तीसरा ह़र्फ़ कौन सा है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना शो'ऐब عَلَيْهِ السَّلَام का क़ौल है (जो कुरआने पाक में मज़्कूर है) ।" चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ (پ۱۲، ھود:۸۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस के ख़िलाफ़ करने लगूं ।*

इसे तिलावत करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : "क्या इस आयत के हुक्म से आगाह हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अपने आप से


www.dawateislami.net

(नेकी की दा'वत की) इब्तिदा करो।''[1]

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ अपने मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के पैकर बन जाइये वरना आप कभी भी अपने मक़्सद में कामयाब न हो सकेंगे।

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

یَا اَیُّھَا الرَّجُلُ الْمُعَلِّمُ غَیْرَہٗ

ھَلَّا لِنَفْسِکَ کَانَ ذَا التَّعْلِیْم

**तर्जमा :** ऐ दूसरे को ता'लीम देने वाले तू ने अपने आप को ता'लीम क्यूं न दी ?

تَصِفُ الدَّوَاءَ لِذِی السِّقَامِ وَذِی الضَّنَا

وَمِنَ الضَّنَا وَالدَّاءِ اَنْتَ سَقِیْم

**तर्जमा :** तू दूसरे बीमारों के लिये दवा तजवीज़ करता है ह़ालांकि तू ख़ुद बीमार है।

اِبْدَاْ بِنَفْسِکَ فَانْھَھَا عَنْ غَیِّھَا

فَاِذَا انْتَھَتْ عَنْہُ فَاَنْتَ حَکِیْم

**तर्जमा :** अपने नफ़्स से इब्तिदा कर इसे सरकशी से मन्अ़ कर अगर येह सरकशी से बाज़ आ गया तो तू साह़िबे ह़िक्मत है।

فَھُنَاکَ یُقْبَلُ مَا وَعَظْتَ وَیُقْتَدٰی

بِالْعِلْمِ مِنْکَ وَیَنْفَعُ التَّعْلِیْم

**तर्जमा :** फिर तेरी नसीह़त क़बूल की जाएगी तेरे इ़ल्म की इक़्तिदा की जाएगी और तेरा समझाना फ़ाइदा देगा।

---

[1] ……شعب الایمان للبیھقی، باب فی الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، الحدیث: ۷۵۲۹، ج۶، ص۸۸



www.dawateislami.net

फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि जिस की दा'वत दे रहा है कामिल तौ़र पर इस पर अ़मल करने वाला हो और जिस से मन्अ़ कर रहा है मुकम्मल तौ़र पर इस से बचने वाला भी हो। क्यूंकि इस पर दो चीज़ें लाज़िम हैं :

(1)....ख़ुद को नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना।

(2)....दूसरों को नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना।

अगर दोनों में से किसी एक में सुस्ती कर रहा हो तो दूसरे में कोताही करना जाइज़ नहीं। नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये येह शर्त़ नहीं कि वोह तमाम गुनाहों से महफ़ूज़ भी हो क्यूंकि इस शर्त़ को लाज़िम क़रार देने से नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का दरवाज़ा ही बन्द हो जाएगा। येही वजह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अगर नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये येह ज़रूरी हो कि वोह हर बुराई से मुबर्रा और हर अच्छाई से मुज़य्यन हो तो फिर न तो कोई नेकी की दा'वत देने वाला होगा और न ही कोई बुराई से मन्अ़ करने वाला।"[1]

---

[1]......احياء علوم الدين، كتاب الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر، الباب الثاني في أركان الأمر بالمعروف وشروطه، ج ٢، ص ٣٨٥



www.dawateislami.net

बे अ़मली के मुतअ़ल्लिक़ मरवी अहादीस में वारिद सख़्त वईद **नेकी की दा'वत देने वाले पर नहीं बल्कि बुराई के मुर्तकिब उस आ़लिम पर है जो लोगों को नसीहत करता हो और बुराई से नफ़रत दिलाता हो।** नेकी की दा'वत देना न तो बा अ़मल से साक़ित है और न ही बे अ़मल से। बल्कि इस काम में तो भलाई ही भलाई है और वईद से शारेअ़ عَلَیْہِ السَّلَام का मक़्सूद येह है कि नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला अपने फ़े'ल को क़ौल के मुताबिक़ करे ताकि जब वोह बुराई को ख़त्म करे और नेकी को आ़म करे तो उस की बात में तासीर हो।[1] इस लिये एक मुबल्लिग़ पर लाज़िम है कि पहले नेकी की दा'वत को सहीह़ त़रीक़े से समझे और अपनी ज़ात पर नाफ़िज़ करे इस के बा'द दूसरों को दा'वत दे ताकि उस की ज़बान में ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी तासीर हो। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

## सुन्नतों का पैकर

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के परवर्दा थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीक़ए तब्लीग़ से ब ख़ूबी आगाह थे। जैसा कि मरवी है कि ह़ज के ज़माने में जब दूरो नज़्दीक से अ़रब क़बाइल मक्कए मुकर्रमा में जम्अ़ होते तो मोह़सिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

①.....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल, स. 35,36 मुलतक़त़न।



www.dawateislami.net

उन क़बाइल में जा जा कर लोगों को इस्लाम की दा'वत दिया करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी नेकी की दा'वत आ़म करने और इस्लाम की इशाअ़त के लिये मदीनए मुनव्वरा में अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल किया और मदीनए मुनव्वरा के कूचे कूचे, गली गली और मह़ल्ले मह़ल्ले जा कर नेकी की दा'वत का ऐसा डंका बजाया कि हर त़रफ़ इस्लाम की बहारें नज़र आने लगीं। पस मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि नेकी की दा'वत आ़म करने में किसी मलामत करने वाले की मलामत से घबराएं न शर्माएं बल्कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रह़ अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में आगे ही आगे बढ़ते चले जाएं, क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में गुम रहा करते थे। दुन्या की कोई कशिश और बे वफ़ा मुआ़शरे की कोई झूटी मुरुव्वत इन से सुन्नत न छुड़ा सकती थी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खाना खा रहे थे कि उन के हाथ से लुक़्मा गिर गया, उन्हों ने उठा लिया और साफ़ कर के खा लिया। येह देख कर बा'ज़ गंवारों ने आंखों से एक दूसरे को इशारा किया (कि कितनी अ़जीब बात है कि अमीरे शहर ने गिरे हुवे लुक़्मे को खा लिया) किसी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीर का भला करे, ऐ हमारे सरदार ! येह



www.dawateislami.net

गंवार तिरछी निगाहों से इशारा करते हैं कि सरदार ने गिरा हुवा लुक़्मा खा लिया हालांकि इन के सामने येह खाना मौजूद है।" तो उन्हों ने फ़रमाया : इन अ़जमियों की वजह से मैं उस चीज़ को नहीं छोड़ सकता जिसे मैं ने सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है। हम एक दूसरे को हुक्म देते थे कि लुक़्मा गिर जाए तो उसे साफ़ कर के खा लिया जाए शैतान के लिये न छोड़ा जाए।[1]

## जिद्दत पसन्द मुबल्लिग़ीन के लिये मदनी फूल

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? जलीलुल क़द्र सहाबी और मुसलमानों के सरदार सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सुन्नतों से किस क़दर प्यार करते थे ! आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़जमियों के इशारों की ज़र्रा बराबर परवाह न की और बे धड़क सुन्नतों पर अ़मल जारी रखा और आज बा'ज़ नादान मुसलमान ऐसे भी हैं कि **मॉडर्न माहोल** में दाढ़ी मुबारक जैसी अ़ज़ीमुश्शान सुन्नत के तर्क को مَعَاذَ الله हिक्मते अ़मली तसव्वुर करते हैं। हक़ीक़ी हिक्मते अ़मली येही है कि लाख बुरा माहोल हो, अग़्यार का ज़ोर हो, बद मज़हबों का शोर हो, कुछ ही हो आप दाढ़ी शरीफ़, इमामए पाक और सुन्नतों भरे सादा लिबास में मलबूस रहिये, खाने पीने और रोज़ मर्रा के मा'मूलात में सुन्नतों का दामन थामे रहिये, लोगों की इस्लाह़ के लिये इनफ़िरादी कोशिश जारी

[1] .....ابنِ ماجه، کتاب الاطعمة، باب اللقمة اذا سقطت، الحدیث: ۳۲۷۸، ج۴ ص۱۷



www.dawateislami.net

रखिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चराग़ से चराग़ जलता चला जाएगा, ह़क़ का बोल बाला होगा, शैत़ान का मुंह काला होगा, हर त़रफ़ सुन्नतों का उजाला होगा, दौलते दुन्या का हर आ़शिक़, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मतवाला होगा और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर घर नूरे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उजाला होगा।

*ख़ाक सूरज से अन्धेरों का इज़ाला होगा*
*आप आएं तो मेरे घर में उजाला होगा*
*होगा सैराब सरे कौसरो तस्नीम वोही*
*जिस के हाथों में मदीने का पियाला होगा*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## वलवला व जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा से ह़ासिल होने वाला एक अहम **मदनी फूल** येह भी है कि दिल में नेकी की दा'वत आ़म करने का ऐसा जज़्बा होना चाहिये जो आप को उस वक़्त तक किसी भी जगह चैन से बैठने न दे जब तक कि हर त़रफ़ नेकी की दा'वत की धूमें न मच जाएं। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप दिन देखते न रात बल्कि जब मौक़अ़ मिलता ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द बिन ज़ुरारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कहीं न


www.dawateislami.net

कहीं इस्लाम की दा'वत पहुंचाने का फ़रीज़ा सर अन्जाम देने के लिये निकल खड़े होते और दूसरों के अपने पास आने का बिल्कुल इन्तिज़ार न करते। आप की इसी इनफ़िरादी कोशिश का समरा कुछ यूं ज़ाहिर हुवा कि बहुत जल्द हर त़रफ़ इस्लाम का बोल बाला हो गया और कुफ़्र इस वादी से ऐसे निकल भागा कि फिर कभी वापस न लौटा और न ही कभी लौटेगा। और येह जो कहा जाता है कि **प्यासा कूंएं के पास जाता है, कूंआं प्यासे के पास नहीं आता।** गोया कि आप ने इस मक़ूले का मफ़्हूम ही बदल डाला या'नी आप साक़िये कौसर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस से बह़रे तौह़ीद के भरे हुवे जाम पी कर जिन लज़्ज़तों से आश्ना हुवे थे, इन्हों ने आप के दिल में येह तड़प पैदा कर दी थी कि ऐ काश ! हर कोई इस्लाम की दा'वते आ़म पर लब्बैक कह कर येह अबदी व सरमदी ने'मतें पा ले।

## नेकी की दा'वत और अमीरे अहले सुन्नत

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जिन मुबल्लिग़ीन ने ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की सीरते त़य्यिबा का येह ह़सीन पहलू अपनाया उन का नाम तारीख़ में सुन्हरी ह़ुरूफ़ से लिखा हुवा है और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ लिखा जाता रहेगा। चुनान्चे,

इन नामों में एक नाम पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद



www.dawateislami.net

इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी हैं। आज **दा'वते इस्लामी** के इस लहलहाते चमनिस्तान की आबयारी में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इनफ़िरादी कोशिश का सब से बड़ा अ़मल दख़्ल है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक जगह बैठ कर लोगों के इस तह़रीक में शामिल होने का इन्तिज़ार नहीं किया बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में सरशार अपने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत को आक़ा की मह़ब्बत के जाम पिलाने के लिये घर घर, क़रिया क़रिया और बस्ती बस्ती जा कर नेकी की दा'वत पेश की।

नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की इत्तिबाअ़ में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه राहे ख़ुदा में सफ़र करते। दिन में बसा अवक़ात एक से ज़ाइद मरतबा बयानात करते और बसों, ट्रेनों में सफ़र कर के मस्जिद मस्जिद, गाऊं गाऊं, शहर शहर ख़ुद तशरीफ़ ले जाते। **बाबुल मदीना** (कराची) में आप के ख़ाने का Tiffen अकसर साथ होता यहां तक कि आ़म त़ौर पर हर जगह नमक की डिबिया बल्कि उ़मूमन अपना पानी तक साथ रखते कि किसी से सुवाल न करना पड़े। अवाइल में अकसर ऐसा होता कि घर वापस आते वक़्त बस आधे रास्ते में उतार देती, रिक्षा या टेक्सी का किराया अदा करने की इस्तित़ाअ़त न होने के सबब आधी रात के वक़्त पांच या छे किलो मीटर पैदल चल कर घर आना पड़ता। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **नेकी की दा'वत** देने के साथ



www.dawateislami.net

साथ मरीज़ों की इयादत करते, दूरो नज़दीक जा जा कर जनाज़ों में शिर्कत फ़रमाते और ग़मी व ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर मुसलमानों की ऐसी दिलजूई फ़रमाते कि वोह भी بِفَضْلِہٖ تَعَالٰی मुतअस्सिर हुवे बिग़ैर न रहते। येह आप की कोशिशों का ही फ़ैज़ान है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से मुन्सलिक **आशिक़ाने रसूल** के सुन्नतों की तर्बिय्यत के बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** मुल्क ब मुल्क शहर ब शहर और क़रिया ब क़रिया **3** दिन, **12** दिन, **30** दिन, बल्कि **12** और **26** माह के लिये भी सफ़र कर के इल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे हैं और **नेकी की दा'वत** की धूमें मचा रहे हैं।

कई ख़ुश नसीब इस्लामी भाई अपने घर बार के हुक़ूक़ निभाते हुवे दा'वते इस्लामी के लिये वक़्फ़ हो चुके हैं और हर वक़्त मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करते रहते हैं। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हर इस्लामी भाई को तरग़ीब दी जाती है कि वोह ज़िन्दगी में यक मुश्त **12** माह, हर **12** माह में **30** दिन और हर माह जदवल के मुताबिक़ तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करे। उ़मूमन मदनी क़ाफ़िले दा'वते इस्लामी के मदनी मराकिज़ और हफ़्तावार इजतिमाआ़त वाली मसाजिद से सफ़र करते हैं, एक क़ाफ़िले में शुरका की ता'दाद कम अज़ कम सात और ज़ियादा से ज़ियादा **12** होती है। मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**नेक बनने बनाने के त़रीक़े**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

***अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में***
***ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो!***

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد



www.dawateislami.net

# नेकी की दा'वत में इस्तिक़ामत

मदीनए मुनव्वरा के पहले मुबल्लिग़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नेकी की दा'वत आ़म करने के जज़्बे से येह दर्स भी मिलता है कि नेकी की दा'वत के लिये कोई जगह या वक़्त मख़्सूस नहीं, बल्कि मुबल्लिग़ हर जगह हर वक़्त मुबल्लिग़ है, लिहाज़ा चलते फिरते, उठते बैठते, घर हो या बाज़ार, मस्जिद हो या मज़ार, खेत हो या गुल्ज़ार, सह़रा हो या लाला ज़ार, मुबल्लिग़ीन को ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत को अपनाते हुवे मुस्तक़िल मिज़ाजी से हर जगह हर घड़ी नेकी की दा'वत के लिये कोशिश करते रहना चाहिये। बा'ज़ इस्लामी भाई बीमारी, घरेलू या मआ़शी आज़माइश आने पर बसा अवक़ात मदनी कामों की सआ़दत से ख़ुद को मह़रूम कर देते हैं। उन्हें चाहिये कि मसाइबो आलाम के आ़लम में बुज़ुर्गाने दीन की मुश्किलात और इन की इस्तिक़ामत को याद फ़रमा लिया करें। जैसा कि मदीना शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहूद की रेशा दवानियों और औस व ख़ज़रज की आपस में दुश्मनी के बा वुजूद बड़ी इस्तिक़ामत व मुस्तक़िल मिज़ाजी से नेकी की दा'वत आ़म की क्यूंकि इन के सामने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस्तिक़ामत व मुस्तक़िल मिज़ाजी थी। चुनान्चे,



www.dawateislami.net

# एक हाथ पर सूरज दूसरे पर चांद

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **862** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"सीरते मुस्त़फ़ा"** सफ़ह़ा **124** पर है : कुरैश के चन्द मुअ़ज़्ज़ज़ व रूअसा (सरदार) अबू त़ालिब के पास आए और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वते इस्लाम और बुत परस्ती के ख़िलाफ़ तक़रीरों की शिकायत की। अबू त़ालिब ने निहायत नर्मी के साथ उन लोगों को समझा बुझा कर रुख़्सत कर दिया लेकिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा के फ़रमान ﴿فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ﴾ (1) की ता'मील करते हुवे अ़लल ए'लान शिर्क व बुत परस्ती की मज़म्मत और दा'वते तौह़ीद का वा'ज़ फ़रमाते ही रहे। इस लिये कुरैश का गुस्सा फिर भड़क उठा। चुनान्चे, तमाम सरदाराने कुरैश या'नी उ़त्बा व शैबा व अबू सुफ़्यान व आ़स बिन हिशाम व अबू जहल व वलीद बिन मुग़ीरह व आ़स बिन वाइल वग़ैरा सब एक साथ मिल कर अबू त़ालिब के पास आए और येह कहा कि आप का भतीजा हमारे मा'बूदों की तौहीन करता है इस लिये या तो आप दरमियान में से हट जाएं और अपने भतीजे को हमारे सिपुर्द कर दें या फिर आप भी खुल कर इन के साथ मैदान में निकल पड़ें ताकि हम दोनों में से एक का फ़ैसला हो जाए।

---

①.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो अ़लानिय्या कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है। (پ۱۴، الحجر:۹۴)



www.dawateislami.net

अबू तालिब ने कुरैश का तेवर देख कर समझ लिया कि अब बहुत ही ख़तरनाक और नाज़ुक घड़ी सर पर आन पड़ी है। ज़ाहिर है कि अब कुरैश बरदाश्त नहीं कर सकते और मैं अकेला तमाम कुरैश का मुक़ाबला नहीं कर सकता। अबू तालिब ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन्तिहाई मुख़्लिसाना और मुश्फ़िक़ाना लहजे में समझाया कि मेरे प्यारे भतीजे ! अपने बुढ़े चचा की सफ़ेद दाढ़ी पर रहम करो और बुढ़ापे में मुझ पर इतना बोझ मत डालो कि मैं उठा न सकूं। अब तक तो कुरैश का बच्चा बच्चा मेरा एहतिराम करता था मगर आज कुरैश के सरदारों का लबो लहजा और उन का तेवर इस क़दर बिगड़ा हुवा था कि अब वोह मुझ पर और तुम पर तल्वार उठाने से भी दरेग़ नहीं करेंगे। लिहाज़ा मेरी राए येह है कि तुम कुछ दिनों के लिये दा'वते इस्लाम मौक़ूफ़ कर दो।

अब तक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी मुईन, मददगार जो कुछ भी थे वोह सिर्फ़ अकेले अबू तालिब ही थे। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा कि अब इन के क़दम भी उखड़ रहे हैं, चचा की गुफ़्तगू सुन कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भर्राई हुई मगर जज़्बात से भरी हुई आवाज़ में फ़रमाया कि चचा जान ! **ख़ुदा की क़सम ! अगर कुरैश मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चांद ला कर दे दें तब भी मैं अपने इस फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा। या तो ख़ुदा इस काम को पूरा फ़रमा देगा या**



www.dawateislami.net

**मैं ख़ुद दीने इस्लाम पर निसार हो जाऊंगा।** हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह जज़्बाती तक़रीर सुन कर अबू तालिब का दिल पसीज गया और वोह इस क़दर मुतअस्सिर हुवे कि इन की हाशिमी रगों के ख़ून का क़तरा क़तरा भतीजे की महब्बत में गर्म हो कर खोलने लगा और इन्तिहाई जोश में आ कर कह दिया कि जाने अम (चचा की जान) ! जाओ मैं तुम्हारे साथ हूं। जब तक मैं ज़िन्दा हूं कोई तुम्हारा बाल बीका नहीं कर सकता।[1]

## हुसूले इस्तिक़ामत का ज़रीआ

मुबल्लिग़ीन को नेकी की दा'वत आम करने में इख़्लास के साथ साथ बरकत का भी मुतलाशी रहना चाहिये और बरकत के हुसूल के लिये अकाबिरीन के दामन से वाबस्ता रहने से बढ़ कर कोई शै नहीं। जैसा कि मोहसिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "बरकत तुम्हारे बड़ों के साथ है।"[2] हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं कि इस हदीसे पाक में मुख़्तलिफ़ उमूर व हाजात में तजरिबा कार होने की बिना पर बड़ो से रुजूअ कर के बरकत हासिल करने की तरग़ीब दिलाई गई है। बड़ों से कौन हज़रात मुराद हैं इस की वज़ाहत करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं कि

---

[1] .....السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، مباداۃ رسول اللہ، الجزء الاول، ص ۲۵۲، ملخصاً

[2] .....المستدرک، کتاب الایمان، باب البرکۃ مع الاکابر، الحدیث: ۲۱۸، ج ۱، ص ۲۳۸



www.dawateislami.net

बड़ों से मुराद या तो उ़म्र रसीदा ह़ज़रात हैं ताकि उन के पास बैठ कर उन की ज़िन्दगी भर के तजरिबात से इस्तिफ़ादा किया जा सके या फिर उ़लमाए किराम मुराद हैं ख़्वाह वोह कम उ़म्र ही हों क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें जलालते इ़ल्मी के मन्सबे आ़ली से नवाज़ा है लिहाज़ा उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाना भी सब पर लाज़िम है।[1]

पस मुबल्लिग़ीन पर लाज़िम है कि बुज़ुर्गों बिल ख़ुसूस उ़लमाए किराम की सोह़बत व ज़ियारत के ज़रीए़ अपने मदनी कामों को बरकतों से हम किनार रखें। इस सिलसिले में **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के त़र्ज़े अ़मल से क्या ख़ूब रहनुमाई ह़ासिल की जा सकती है।

## अमीरे अहले सुन्नत और उ़लमाए अहले सुन्नत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **87** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत''** सफ़ह़ा **56** पर है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **उ़लमाए अहले सुन्नत** دَامَتْ فُيُوضُهُم से बे ह़द अ़क़ीदत व मह़ब्बत रखते हैं और न सिर्फ़ ख़ुद उन की ता'ज़ीम करते हैं बल्कि अगर कोई आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सामने उ़लमाए अहले सुन्नत دَامَتْ فُيُوضُهُم के बारे में कोई नाज़ैबा कलिमा कह दे तो इस पर

[1] .....فیض القدیر، تحت الحدیث: ۳۲۰۵، ج۳، ص۲۸۷



www.dawateislami.net

सख़्त **नाराज़** होते हैं । चुनान्चे **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक जगह तहरीर फ़रमाते हैं कि "इस्लाम में **उ़लमाए ह़क़** की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत है और वोह **इ़ल्मे दीन** के बाइ़स अ़वाम से अफ़्ज़ल होते हैं । ग़ैरे आ़लिम के मुक़ाबले में इन को इ़बादत का सवाब भी ज़ियादा मिलता है ।" जैसा कि मरवी है : "आ़लिम की दो रक्अ़त ग़ैरे आ़लिम की सत्तर रक्अ़त से अफ़्ज़ल है ।"(1) लिहाज़ा **दा'वते इस्लामी** के तमाम वाबस्तगान बल्कि हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वोह उ़लमाए अहले सुन्नत से हरगिज़ न टकराएं, इन के **अदबो एह़तिराम** में कोताही न करें, उ़लमाए अहले सुन्नत की तह़क़ीर से क़त़्अ़न गुरेज़ करें, बिला इजाज़ते शरई उन के किरदार और अ़मल पर तन्क़ीद कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम न करें ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़फ़्स अल कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : "जिस ने किसी **आ़लिम** की ग़ीबत की तो क़ियामत के रोज़ उस के चेहरे पर लिखा होगा, येह **अल्लाह** की रह़मत से मायूस है ।"(2) एक **मक्तूब** में लिखते हैं : "**उ़लमा** को हमारी नहीं, हमें उ़लमा دَامَتْ فُيُوضُهم की ज़रूरत है, येह **मदनी फूल** हर **दा'वते इस्लामी** वाले की नस नस में **रच बस** जाए ।" एक मरतबा फ़रमाया : "उ़लमा के क़दमों से हटे तो भटक जाओगे ।"(3)

---

(1)......كنز العُمّال، كتاب العلم، الباب الاول، الحديث: ٢٨٧٨٣، ج٥، الجزء العاشر، ص ٦٧

(2)......مكاشفة القلوب، ص ٧١

(3).....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 57 ।



www.dawateislami.net

## अग़्यार की पैरवी से इजतिनाब

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा से येह दर्स भी मिलता है कि मुबल्लिग़ीन को कभी इस्लाम के अ़त़ा कर्दा उस्लूबे दा'वत से मुंह मोड़ कर अग़्यार की पैरवी न करनी चाहिये। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़बशा में नसारा के त़रीक़ए दा'वत का मुशाहदा किया तो मदीने में रहने वाले यहूदियों के उस्लूबे दा'वत को भी बग़ौर देखा मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम के अ़त़ा कर्दा उस्लूबे दा'वत को अपना कर जो कामयाबी ह़ासिल की वोह मोह़ताजे बयान नहीं। मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज कल इस्लाह़ और इशाअ़ते दीन के नाम पर बा'ज़ नादान मुसलमानों ने ग़ैर मुस्लिमों के त़रीक़ए इबादत व दा'वत को इख़्तियार कर रखा है, न उन का लिबास मुसलमानों जैसा न उन की सूरत मुसलमानों जैसी और न ही उन का त़रीक़ा मुसलमानों जैसा। बल्कि वोह नादानिस्ता त़ौर पर ग़ैर मुस्लिमों के त़रीक़ए तब्लीग़ की पैरवी कर रहे हैं, ह़ालांकि इस्लाम अग़्यार के त़रीक़ए इबादत व दा'वत से क़त़ई इजतिनाब का दर्स देता है। चुनान्चे,

## अज़ान की इब्तिदा

मस्जिदे नबवी की ता'मीर तो मुकम्मल हो गई मगर लोगों को नमाज़ों के वक़्त जम्अ़ करने का कोई ज़रीआ़ नहीं था जिस से



www.dawateislami.net

नमाज़े बा जमाअ़त का इन्तिज़ाम होता, इस सिलसिले में शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया : बा'ज़ ने नमाज़ों के वक़्त आग जलाने का मश्वरा दिया, बा'ज़ ने नाक़ूस बजाने की राए दी मगर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैर मुस्लिमों के इन त़रीक़ों को पसन्द नहीं फ़रमाया। फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह तजवीज़ पेश की, कि हर नमाज़ के वक़्त किसी आदमी को भेज दिया जाए जो पूरी मुस्लिम आबादी में नमाज़ का ए'लान कर दे। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस राए को पसन्द फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म फ़रमाया कि वोह नमाज़ों के वक़्त लोगों को पुकार दिया करें। चुनान्चे, वोह "**अस्सलातु जामिअ़ह**" कह कर पांचों नमाज़ों के वक़्त ए'लान फ़रमाया करते, इसी दरमियान में एक सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ैद अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़्वाब में देखा कि अज़ाने शरई के अल्फ़ाज़ कोई सुना रहा है। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और दूसरे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी इसी क़िस्म के ख़्वाब नज़र आए। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को मिन जानिबिल्लाह समझ कर क़बूल फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म दिया कि तुम बिलाल को अज़ान के कलिमात



www.dawateislami.net

सिखा दो क्यूंकि वोह तुम से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हैं। चुनान्चे, उसी दिन से शरई अज़ान का त़रीक़ा शरूअ़ हो गया जो आज तक जारी है और क़ियामत तक जारी रहेगा।[1]

## ख़ुश अख़्लाक़ी

**प्यारे इस्लामी भाइयो!** ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सख़्त लहजा पहले ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़न्दा पेशानी व ख़ुश अख़्लाक़ी ही की बदौलत नर्म मिज़ाजी में बदला, फिर इन की क़िस्मत ने मज़ीद अंगड़ाई ली और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम कुछ यूं ज़ाहिर हुवा कि दा'वते इस्लाम तासीर का तीर बन कर इन के दिलों में इस त़रह़ पैवस्त हुई की बनी अ़ब्दुल अशहल में कुफ़्रे शिर्क का जिगर पारा पारा हो गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा से येह मदनी फूल भी ह़ासिल हुवा कि **मुबल्लिग़ीन** को किसी भी लम्ह़े ख़ुश अख़्लाक़ी, नर्म मिज़ाजी और ख़न्दा पेशानी का दामन अपने हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये। येही वजह है कि क़ुरआनो ह़दीस में भी इन अवसाफ़ के बे शुमार फ़ज़ाइल मरवी हैं। चुनान्चे,

## नर्म मिज़ाजी

क़ुरआने मजीद में नर्म मिज़ाजी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेहरबानी क़रार दिया है। चुनान्चे,

---

①.....सीरते मुस्त़फ़ा स. **184**।



www.dawateislami.net

फ़रमाने बारी तआला है :

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۠ (پ۴، ال عمران:۱۵۹)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब ! तुम इन के लिये नर्म दिल हुवे और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द (आस पास) से परेशान हो जाते।*

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े महशर तुम में से मेरे सब से ज़ियादा महबूब और मेरी मजलिस में सब से ज़ियादा क़रीब वोह लोग होंगे जो तुम में अच्छे अख़्लाक़ वाले और नर्म ख़ू हैं, जो लोगों से और लोग उन से महब्बत करते हैं। तुम में मेरे लिये सब से ज़ियादा क़ाबिले नफ़रत और क़ियामत के दिन मेरी मजलिस में सब से ज़ियादा दूर वोह लोग होंगे जो ज़ियादा बातें करने वाले, ज़बान दराज़ और तकब्बुर करने वाले होंगे।(1)

## तुम से बेहतर, मुझ से बदतर

**मन्क़ूल** है कि मामूनुर्रशीद को किसी ने नसीहत की और सख़्ती से पेश आया तो वोह बोला : ऐ शख़्स ! नर्मी इख़्तियार कर

[1]......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی معالی الاخلاق، الحدیث: ۲۰۲۵، ج۳، ص ۴۰۹



www.dawateislami.net

कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम से बेहतर (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को मुझ से बद तर (या'नी फ़िरऔ़न) के पास भेजा तो नर्मी से पेश आने का हुक्म दिया। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ یَخْشٰى ﴿۴۴﴾ (پ۱۶، طٰہٰ: ۴۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो उस से नर्म बात कहना इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या कुछ डरे।*

***है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में***
***हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में***

## ख़न्दा पेशानी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : ह़ुस्ने अख़्लाक़ गुनाहों को इस त़रह़ पिघला देता है जिस त़रह़ धूप बर्फ़ को पिघला देती है।[1]

और एक रिवायत में है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों को तुम अपने अम्वाल से ख़ुश नहीं कर सकते लेकिन तुम्हारी ख़न्दा पेशानी और ख़ुश अख़्लाक़ी उन्हें ज़रूर ख़ुश कर सकती हैं।[2]

---

[1] ……شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۸۰۳۶، ج۶، ص۲۴۷

[2] ……شعب الایمان، الحدیث: ۸۰۵۴، ج۶، ص۲۵۳



www.dawateislami.net

# नफ़रत महब्बत में बदल गई

मुबल्लिग़ीन की तरग़ीब के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़याते त़य्यिबा का एक वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है : दा'वते इस्लामी के अवाइल में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को एक हमसाए के बारे में पता चला कि वोह आप को बुरा भला कहता है और उस ने आप की इमामत में नमाज़ पढ़ना भी छोड़ दी है। एक दिन वोह आप को अपने दोस्त के साथ सरे राह मिल गया। आप ने उसे सलाम किया तो उस ने मुंह दूसरी त़रफ़ फेर लिया। लेकिन आप ने उस की बे रुख़ी का कोई असर न लिया और उस के सामने हो कर मुस्कुराते हुवे बड़ी ख़न्दा पेशानी से कहा : बहुत नाराज़ हो भाई ?.....और इस के साथ ही उसे अपने सीने से लगा लिया और गर्म जोशी से मुआ़नक़ा किया। उस के दोस्त का कहना है कि वोह आप के जाने के बा'द कहने लगा : "अ़जीब आदमी हैं, मेरे मुंह फेर लेने के बा वुजूद मुझे गले लगा लिया, जब इन्हों ने मुझे गले लगाया तो यूं महसूस हुवा कि दिल की सारी नफ़रत महब्बत में बदल गई, लिहाज़ा ! मैं मुरीद बनूंगा तो इन्ही का बनूंगा।" फिर वोह इस्लामी भाई अपने कहने के मुत़ाबिक़ आप के मुरीद भी बने और दाढ़ी शरीफ़ भी चेहरे पर सजा ली।



www.dawateislami.net

*अन्जुमन में भी मयस्सर रही ख़ल्वत उस को*

*शम्ए़ मह़्फ़िल की त़रह़ सब से जुदा, सब का रफ़ीक़*

*मिस्ले ख़ुर्शीदे सह़र फ़िक्र की ताबानी में*

*बात में सादा व आज़ादा, मआ़नी में दक़ीक़*

*उस का अन्दाज़े नज़र अपने ज़माने से जुदा*

*उस के अह़वाल से मह़रुम नहीं पीराने त़रीक़*

## सब्रो तह़म्मुल और बुर्दबारी व दर गुज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हु़ज़ैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़्त कलामी पर जिस सब्रो तह़म्मुल और बुर्दबारी व दर गुज़र का मुज़ाहरा किया वोह अपनी मिसाल आप है और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मुबल्लिग़ीन के लिये हमेशा मश्अ़ले राह रहेगा क्यूंकि अगर नेकी की दा'वत पेश करते हुवे मुबल्लिग़ के साथ ना रवा सुलूक किया जाए तो उस पर लाज़िम है कि वोह ऐसे मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ सब्रो तह़म्मुल और बुर्दबारी का मुज़ाहरा करे, यक़ीनन उस का येह अ़मल मुख़ात़ब के दिल में नर्म गोशा पैदा कर देगा और इस के बेहतरीन नताइज बर आमद होंगे। चुनान्चे,



www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **98** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल**" के सफ़ह़ा **55** पर है : नेकी की दा'वत देने वाले को सब्रो इस्तिक़्लाल वाला होना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल बयान करते हुवे सब्र को नेकी की दा'वत के साथ मिला दिया है। चुनान्चे, क़ुरआने पाक में है :

یٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَؕ (پ۲۱، لقمٰن: ۱۷)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ बरपा रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ कर और जो उफ़्ताद (मुसीबत) तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर।*

## सब्रो तह़म्मुल की आ'ला मिसाल

एक बुज़ुर्ग के बारे में मन्क़ूल है कि वोह एक ताजिर के पास खड़े हो कर उसे नेकी की दा'वत दे रहे थे और उसे ऐसे मह़ल्ले में मस्जिद बनाने के लिये सदक़ा व ख़ैरात करने पर उभार रहे थे जहां मस्जिद की ज़रूरत थी मगर उस ने बुज़ुर्ग से तआ़वुन करने के बजाए उन्हें गालियां दीं और उन के चेहरे पर थूकते हुवे कहा : "तुम लोग अपने लिये माल जम्अ़ करते हो और सह़ीह़ मसरफ़ (या'नी ख़र्च करने की जगह) में इस्ति'माल नहीं करते।" उस नेक



www.dawateislami.net

शख़्स ने अपने चेहरे से थूक साफ़ करते हुवे कहा : "तुम ने जो कुछ मेरे साथ किया मैं ने अपनी ज़ात के लिये इसे क़बूल किया लेकिन मैं मस्जिद बनाने के लिये **फ़ी सबीलिल्लाह** तुम से सुवाल कर रहा हूं।" येह सुन कर उसे नदामत व शर्मिन्दगी हुई और अपनी थैली में हाथ डाल कर वाफ़िर मिक़्दार में माल निकाला और अपने फ़े'ल पर मा'ज़िरत करते हुवे वोह माल उन के ह़वाले कर दिया। अगर नेकी की दा'वत देने वाले बुज़ुर्ग सब्रो तह़म्मुल से काम न लेते और ताजिर की त़रफ़ से अज़िय्यत को बरदाश्त न करते तो उन से मा'ज़िरत न की जाती और न ही वोह चन्दा ह़ासिल करने में कामयाब होते।[1]

## बुर्दबारी व दर गुज़र की आ'ला मिसाल

**ऐ काश !** हमारे अन्दर येह जज़्बा पैदा हो जाए कि हम अपनी ज़ात और अपने नफ़्स की ख़ातिर **ग़ुस्सा** करना ही छोड़ दें। जैसा कि हमारे बुज़ुर्गों का जज़्बा था कि कोई उन से कितना ही बुरा सुलूक करता येह हमेशा उस से दर गुज़र ही फ़रमाते। चुनान्चे,

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में एक बार जब डाक पेश की गई तो बा'ज़ ख़ुतूत मुग़ल्लज़ात (या'नी गन्दी गालियों) से भरपूर थे। मो'तक़िदीन बरहम (ग़ुस्से) हुवे कि हम इन लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर

---

①.....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल, स. 55।



www.dawateislami.net

करेंगे। तो **इमामे अहले सुन्नत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने इरशाद फ़रमाया : "जो लोग ता'रीफ़ी ख़ुतूत लिखते हैं पहले उन को जागीरें तक़्सीम करो, फिर गालियां लिखने वालों पर मुक़द्दमा दाइर करना।"(1) या'नी जब ता'रीफ़ करने वालों को इन्आ़म नहीं देते तो बुराई करने वालों से बदला क्यूं लें !

*अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी*
*ख़ुर्शीदे इल्म उन का द-रख़्शां है आज भी*

## अमीरे अहले सुन्नत की बुर्दबारी

दा'वते इस्लामी के इब्तिदाई अय्याम की बात है कि जब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बाबुल मदीना (कराची) की मुख़्तलिफ़ मसाजिद में जा जा कर दर्सो बयान और इनफ़िरादी कोशिश किया करते थे। उस वक़्त अम्नो अमान की सूरते ह़ाल आज (या'नी सि. 1429 हि-सि. 2008 ई.) के मुक़ाबले में बहुत बेहतर थी। एक मरतबा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रात गए बस न मिलने की वजह से पैदल ही अपने घर (वाक़ेअ़ मूसा लैन) वापस आ रहे थे। राहे ख़ुदा के इस सफ़र में 2 इस्लामी भाई भी आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराह थे। जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه टावर (बाबुल मदीना कराची का एक मश्हूर मक़ाम) के क़रीब

(1)....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 120, मुलख़्ख़सन।



www.dawateislami.net

पहुंचे तो वहां फुट पाथ पर चन्द नौजवान (जिन की वज़्अ़ क़त़्अ़ शरीफ़ों की सी न थी) ख़ुश गप्पियों में मश्ग़ूल थे। इन में से एक को शरारत सूझी और उस ने पान की पीक अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कपड़ों पर थूक दी जिस से आप के कपड़े ख़राब हो गए। येह ग़ैर अख़्लाक़ी ह़रकत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के शरीके सफ़र उन 2 इस्लामी भाइयों को सख़्त नागवार गुज़री। इस से पहले कि वोह आगे बढ़ कर कुछ करते। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन्हें रोकते हुवे सरगोशी में कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : **येही तो वक़्त है इन पर इनफ़िरादी कोशिश करने का।**

येह कह कर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस शरारती नौजवान के क़रीब पहुंचे और सलाम करने के बा'द निहायत नर्मी से इस्तिफ़सार फ़रमाया : प्यारे भाई ! मुझ पर पान थूक कर आप को क्या मिला ? वोह नौजवान कहने लगा : "बस हमें मौलवियों को तंग करने में बहुत मज़ा आता है।" **अगर आप का दिल इस में ख़ुश होता है तो लीजिये मज़ीद पान थूक दीजिये।** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने निहायत ही नर्म लहजे में येह कहते हुवे उन के सामने अपना दामन फैला दिया। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ह़िल्म और शफ़्क़त भरा लहजा देख कर उन नौजवानों के सर शर्म से झुक गए। उन्हों ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अपनी ग़लती की मुआ़फ़ी मांगी। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इनफ़िरादी कोशिश



www.dawateislami.net

जारी रखते हुवे मुस्कुरा कर इरशाद फ़रमाया : मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूंही मुआ़फ़ी नहीं मिल जाएगी, पहले आप को मेरे साथ चाए पीना होगी। अ़ता़ओं की येह बरसात देख कर वोह नौजवान और भी मुतअस्सिर नज़र आने लगे और आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ चाए भी पी। इसी दौरान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन्हें **गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद** (गुलिस्ताने औकाड़वी, सोल्जर बाज़ार, बाबुल मदीना कराची) में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की। उन नौजवानों ने सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की न सिर्फ़ निय्यत की बल्कि जुमा'रात को इजतिमाअ़ में शिर्कत के लिये गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद भी जा पहुंचे।

येह देख कर उन की आंखें फटी की फटी रह गईं कि उन्हों ने जिसे आ़म सा शख़्स समझ कर सताया था, वोही हज़ारों के इजतिमाअ़ में बयान फ़रमा रहे हैं और शुरकाए इजतिमाअ़ बड़ी तवज्जोह व अ़क़ीदत से इस बयान को सुन रहे हैं। उन्हों ने क़रीब बैठे हुवे इस्लामी भाई से पूछा कि येह बयान फ़रमाने वाले कौन हैं ? उस ने उन्हें बताया : येह दा'वते इस्लामी के बानी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं। वोह नौजवान मज़ीद मुतअस्सिर हुवे कि येह तो बहुत बड़े आ़लिमे दीन भी हैं। बयान के इख़्तिताम पर जब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ मांगी तो उन इस्लामी भाइयों ने भी रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ



www.dawateislami.net

से मग़फ़िरत की भीक मांगी। सलातो सलाम के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने खुद आगे बढ़ कर इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात करना शुरूअ़ कर दी। जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नज़र उन नौजवान इस्लामी भाइयों पर पड़ी तो आगे बढ़ कर हर एक को अपने सीने से ऐसा लगाया कि वोह दिन और आज का दिन, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह तमाम इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में मसरूफ़ हैं।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** देखा आप ने! मुबल्लिग़ हो तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जैसा! अगर उस नौजवान की शरारत पर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ग़ुस्से में आ जाते और झगड़ा करते तो येह मदनी नताइज न मिल पाते। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि बिल ख़ुसूस नेकी की दा'वत देते वक़्त कोई कितना ही ग़ुस्सा दिलाए कैसा ही दिल दुखाए, अपनी ज़बान व दिल को क़ाबू में रखें क्यूंकि जब ज़बान बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बना बनाया खेल बिगड़ जाता है।

***है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में***
***हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में***

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

## ख़ुद ए'तिमादी

मुबल्लिग़े मदीना ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा से येह भी मा'लूम होता है कि आप



www.dawateislami.net

में बला की ख़ुद ए'तिमादी थी और आप सामने वाले के मन्सब व शख़्सिय्यत से बिल्कुल मरऊ़ब न होते थे। चुनान्चे, येही वजह है कि आप ने **क़बीलए बनी अ़ब्दुल अशहल** के अ़क़्लमन्द व दाना सरदार ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर के बिगड़े हुवे तेवर देखने के बा वुजूद जब पुर ए'तिमाद लहजे में येह फ़रमाया कि "मेरे पास बैठ कर मेरी बात सुन लीजिये ! अगर समझ में आ जाए तो इसे मान लीजियेगा और अगर पसन्द न आए तो हम आप को मजबूर नहीं करेंगे बल्कि (यहां से) चले जाएंगे।" तो आप की इस नर्म मिज़ाजी और ख़ुद ए'तिमादी ने ही इन्हें आप की बात सुनने पर मजबूर कर दिया था। लिहाज़ा इनफ़िरादी कोशिश के लिये बिल ख़ुसूस शख़्सिय्यात से मुलाक़ात करने वाले मुबल्लिग़ीन को याद रखना चाहिये कि उन के सामने मौजूद शख़्सिय्यत कितने ही बड़े ओ़हदे पर क्यूं न हो वोह क़ल्बी तौ़र पर हरगिज़ हरगिज़ उस के ओ़हदे या मन्सब से मरऊ़ब न हों और न ही किसी क़िस्म की एह़सासे कमतरी का शिकार हों बल्कि भरपूर ख़ुद ए'तिमादी का मुज़ाहरा करते हुवे इनफ़िरादी कोशिश करें। मगर याद रखें कि उन की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में उस शख़्सिय्यत के मदनी माह़ोल से मुतअस्सिर हो जाने पर वोह **ख़ुद पसन्दी** में मुब्तला होने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करें जिस ने उन को इनफ़िरादी कोशिश की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई और उस शख़्सिय्यत के दिल में मदनी माह़ोल की मह़ब्बत डाली।



www.dawateislami.net

# मुआ़मला फ़ह्मी

**ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **इनफ़िरादी कोशिश** के वाक़िए़ से येह मदनी फूल भी मिलता है कि मुबल्लिग़ को मुआ़मला फ़ह्म होना चाहिये। या'नी जिस त़रह़ **ह़ज़रते उसैद बिन ह़ुज़ैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नेज़ा ताने आते दिखाई दिये और **ह़ज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुआ़मले की नज़ाकत का एह़सास दिलाया तो आप ने ह़ज़रते **उसैद बिन ह़ुज़ैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सख़्त त़र्ज़े अ़मल पर जिस त़रह़ गुफ़्तगू फ़रमाई अगर मुबल्लिग़ीन इसे अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा लें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ नेकी की दा'वत की धूमें मच जाएंगी। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **200** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"इनफ़िरादी कोशिश"** सफ़ह़ा **135** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुआ़मला फ़ह्मी के मुतअ़ल्लिक़ येह फ़रमान नक़्ल है कि "जिस को येह गुर मिल गया कि कहां क्या बोलना है तो वोह कामयाब हो गया ! ! !"

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मुबल्लिग़ को मुआ़मला फ़ह्म होना चाहिये या'नी वोह जानता हो कि किस वक़्त, किस से क्या बात करनी है ? मसलन आप की मुलाक़ात किसी नए इस्लामी



www.dawateislami.net

भाई से हुई और उस ने बताया कि **मेरी मां को केन्सर हो गया है** और आप ने उस की क़ल्बी कैफ़िय्यात का लिहाज़ किये बिग़ैर उसे मौत के तसव्वुर से डराना शुरूअ़ कर दिया कि अ़न क़रीब मौत आने वाली है और तुम्हारी मां तो बिल्कुल क़ब्र के किनारे पहुंच चुकी है वग़ैरा वग़ैरा तो इस क़िस्म की गुफ़्तगू के बा'द आप के बारे में उस के क्या तअस्सुरात होंगे ? इस का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल नहीं बल्कि हो सकता है वोह ज़बान से इज़हार भी कर डाले। इस लिये ऐसे मौक़अ़ पर ग़म ख़्वारी करते हुवे अफ़्सोस का इज़हार कीजिये और कुछ इस त़रह़ से उस की ग़म ख़्वारी कीजिये : "**अल्लाह** तआ़ला आप की वालिदा को जल्द अज़ जल्द शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाए, इन्हें हर आफ़त, दुख और परेशानी से बचाए। मैं इजतिमाअ़ में भी दुआ़ करूंगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ..... बल्कि हो सके तो आप भी मेरे साथ चलिये, दोनों भाई मिल कर दुआ़ करेंगे, इस के इलावा राहे ख़ुदा में सफ़र करने वालों की दुआ़एं जल्द क़बूल होने की बिशारत भी दी गई है, लिहाज़ा ! आप भी कोशिश कर के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र इख़्तियार कीजिये और ढेरों सवाब के हुसूल के साथ साथ अपनी वालिदा की जल्द सिह़्ह़तयाबी के लिये दुआ़ भी कीजिये।"

## सोने चांदी से ज़ियादा ह़सीन नसीह़तें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर हम ने मौक़अ़ मह़ल के मुत़ाबिक़ गुफ़्तगू न की तो मुमकिन है किसी बे मौक़अ़ बात की वजह से वोह इस्लामी भाई हम से दूर हो जाए और हम फ़ाइदे के



www.dawateislami.net

बजाए नुक़्सान कर बैठें। लिहाज़ा हमें ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी येह पांच नसीह़तें हमेशा याद रखनी चाहियें। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने पांच ऐसी नसीह़तें फ़रमाईं जो सोने और चांदी से ज़ियादा ह़सीन हैं और वोह येह हैं :

(1).....**लाया 'नी** (لایعنی या 'नी फ़ुज़ूल) मुआ़मले में हरगिज़ गुफ़्तगू न करना कि येही सलामती के ज़ियादा क़रीब है और ख़त़ा व लग़्ज़िश से बे ख़ौफ़ मत हो जाना।

(2).....ज़रूरत के मुआ़मले में भी मौक़अ़ व मह़ल देखे बिग़ैर हरगिज़ गुफ़्तगू मत करना कि बसा अवक़ात अपने फ़ाइदे के मुआ़मले में मौक़अ़ व मह़ल का ख़याल किये बिग़ैर गुफ़्तगू करने वाला भी शर्मसार हो जाता है।

(3).....किसी बुर्दबार से बह़्स-मुबाह़सा करना न किसी बे वुक़ूफ़ से, क्यूंकि बुर्दबार शख़्स तुझे ख़ूब तड़पाएगा और बे वुक़ूफ़ शख़्स अज़िय्यत पहुंचाएगा।

(4).....जब तेरा कोई भाई तेरे पास मौजूद न हो तो उस का ऐसा तज़किरा करना जैसा कि तू पसन्द करता है कि वोह तेरी अ़द्मे मौजूदगी में तेरा तज़किरा करे और उस की हर वोह ख़त़ा व लग़्ज़िश मुआ़फ़ फ़रमा देना जिस पर तू अपने लिये उस की जानिब से मुआ़फ़ी को पसन्द करता है।



www.dawateislami.net

(5).....ऐसे शख़्स जैसे आ'माल बजा लाना जो जानता है कि उसे एह़सान का इन्आ़म मिलेगा और बुराई की सज़ा ।[1]

## गर्म लोहे पे चोट कारी वरना बेकारी

एक मुबल्लिग़ ने बताया कि एक मॉडर्न क्लीन शैव नौजवान से मेरी मुलाक़ात होने लगी तो इब्तिदाई एक दो मुलाक़ातों के बा'द ही एक दिन मैं ने उन से कह दिया कि "प्यारे इस्लामी भाई ! मेरा दिल चाहता है कि आप भी दाढ़ी रखने की सुन्नत पर अ़मल कर लें ।" वोह इस्लामी भाई येह बात सुन कर झेंप गए और उस दिन के बा'द मुझ से मिलना छोड़ दिया । अफ़्सोस ! मुझ से ग़लती हो गई और मैं ने नेकी की दा'वत देने में जल्द बाज़ी से काम लिया जिस का नतीजा येह हुवा कि उस इस्लामी भाई ने मिलना ही छोड़ दिया अगर वोह मिलते रहते तो कम अज़ कम मैं उन्हें नेकी की दा'वत तो पेश करता रहता, इस त़रह़ आहिस्ता आहिस्ता उन का ज़ेह्न बन जाता और वोह भी एक दिन अपने चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी सजा लेते ।

चुनान्चे, मा'लूम हुवा कि मुबल्लिग़ीन का इनफ़िरादी कोशिश के लिये जिन इस्लामी भाइयों से सामना मुमकिन है उन का तअ़ल्लुक़ ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ शो'बों से हो सकता है मसलन त़ालिबे इ़ल्म, उस्ताज़, वकील, डॉक्टर, फ़ौजी अफ़्सर, कारोबारी

---

[1] .....قوت القلوب، ج ۱، ص ۱۳۸



www.dawateislami.net

शख़्स, मुलाज़मत पेशा वग़ैरा । फिर उन में कोई जवान होगा तो कोई बुढ़ा । और इसी बिना पर उन में से हर एक की गुफ़्तगू, लिबास, रहन सहन और सोच का अन्दाज़ जुदागाना होता है, लिहाज़ा ! इन्हें चाहिये कि हर एक पर उस की नफ़्सिय्यात के मुताबिक़ इनफ़िरादी कोशिश करें और येह गुर सीखने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना, **41** दिन का मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स करना और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयानात व मदनी मुज़ाकरों को सुनना बेह़द मुफ़ीद है ।

## मुआ़मला फ़ह्मी के हुसूल की सूरतें

मुआ़मला फ़ह्मी से मुराद चूंकि येह जानना है कि किस से कैसी और क्या बात करनी है ? लिहाज़ा मुबल्लिग़ीन पर लाज़िम है कि नेकी की दा'वत में मुआ़मला फ़ह्मी के इन दो बुन्यादी अ़नासिर को हमेशा पेशे नज़र रखें :

﴾1﴿.....मुख़ात़ब कौन है ?

﴾2﴿.....नेकी की दा'वत कैसी है ? या'नी नेकी की दा'वत पेश करने से पहले ख़ूब ग़ौर कर लें कि जिन अल्फ़ाज़ से नेकी की दा'वत पेश कर रहे हैं वोह कैसे हैं ?

इन दो अ़नासिर की बिना पर मुबल्लिग़ीन को मुआ़मला फ़ह्मी के हुसूल के लिये जिन बातों पर अ़मल करना चाहिये आइये इन का जाइज़ा लेते हैं :



www.dawateislami.net

## ﴾1﴿.....मुख़ातब कौन है ?

मुराद येह है कि आप जिस को नेकी की दा'वत पेश कर रहे हों उस की हैसिय्यत व कैफ़िय्यत और क़ाबिलिय्यत वग़ैरा को मद्दे नज़र रखें ।

## मुख़ातब की त़बीअ़त का ख़याल रखना

मुख़ातब की त़बीअ़त का ख़याल रखा जाए कि कहीं उस की त़बीअ़त में इस वक़्त चिड़ चिड़ा पन तो नहीं ? या वोह ए'तिराज़ और नुक्ता चीनी की त़रफ़ माइल तो नहीं ? या कहीं वोह ग़ुस्से में भरा हुवा तो नहीं ? या वोह ग़ैर सन्जीदा तो नहीं ? क्यूंकि इन ह़ालतों में पेश की गई नेकी की दा'वत के नतीजा ख़ेज़ होने का इमकान बहुत कम बल्कि न होने के बराबर है ।

मुख़ातब अगर चिड़ चिड़े पन का शिकार हो या ए'तिराज़ और नुक्ता चीनी पर आमादा हो तो उस वक़्त मुबल्लिग़ के लिये बेहतर येह है कि मुनासिब मौक़अ़ के इन्तिज़ार में फ़ौरन वहां से हट जाए और जब कभी किसी दूसरे मौक़अ़ पर मुख़ातब इन्तिशार ज़ेहनी वग़ैरा का शिकार न हो तो उस वक़्त ह़क़ बात बयान करने में देर न करे । जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ اِذَا رَاَیْتَ الَّذِیْنَ یَخُوْضُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى یَخُوْضُوْا فِیْ حَدِیْثٍ غَیْرِهٖؕ وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं तो उन से मुंह फेर ले जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद*



www.dawateislami.net

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَ مَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ لٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۶۹﴾ (پ۷،الانعام:۶۸،۶۹)

आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ। और परहेज़गारों पर इन के हिसाब से कुछ नहीं हां नसीहत देना शायद वोह बाज़ आएं।

**मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत** मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी में इन आयाते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : ऐ मुसलमान ! जब तू ऐसे लोगों को देखे जो आयाते कुरआनिय्या या महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात या हुज़ूर की ज़ाते गिरामी का मज़ाक़ उड़ाने, दिल्लगी करने में मश्ग़ूल हैं तो तू उन के पास न तो बैठ, न उन की इस हरकत में किसी तरह शिर्कत कर, न उन की इस गुफ़्तगू को रग़बत से सुन, बल्कि या उन्हें इस हरकत से रोक दे या वहां से चला जा जब तक वोह येह ज़िक्र छोड़ कर दूसरी बात शुरूअ़ न कर दें तब तक उन से दूर रह। अगर कभी तुझे शैतान हमारा येह हुक्म भुला दे और तू भूल कर वहां बैठ जाए तो हमारी येह मुमानअ़त याद आ जाने पर फ़ौरन वहां से हट जा, एक आन के लिये अब वहां न बैठ कि वोह क़ौम ज़ालिम है, उन के साथ निशस्त व बरख़ास्त करने वाला भी ज़ालिम है। हां ! जो मुसलमान किसी वजह से वहां बैठने, वहां जाने पर मजबूर हों तो उन कुफ़्फ़ार का हिसाब इन मजबूरों से न लिया जाएगा और येह मजबूर मुसलमान गुनहगार न होंगे मगर ख़याल रखना कि मजबूरी का बहाना न बनाना, दिल से उन की तरफ़ रग़बत न करना बल्कि



www.dawateislami.net

ऐसी मजबूरी में भी बक़दरे ताक़त उन्हें नसीहत करना, उन के इस अमल की बुराई ज़ाहिर करना इस उम्मीद पर कि शायद वोह लोग इन हरकतों से बाज़ आ जाएं, खुदा तौफ़ीक़ दे तो मुसलमान हो जाएं इस सूरत में तुझे अज्रो सवाब मिलेगा।[1]

## मुख़ातब की हैसिय्यत व मर्तबे का ख़याल रखना

मुख़ातब की हैसिय्यत और उस की सियासी व मुआशरती मक़ाम व मर्तबे को भी हमेशा पेशे नज़र रखना चाहिये, क्यूंकि ऐसे लोग इज़्ज़त अफ़्ज़ाई के आदी हो चुके होते हैं। अगर मुबल्लिग़ इन के मक़ाम व मर्तबे को पेशे नज़र न रखेगा तो मुमकिन है कि शैतान इन्हें गुमराह कर दे और हक़ बात सुनने से रोक दे। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام को जब फ़िरऔन की तरफ़ भेजा गया तो नर्म लबो लहजा इख़्तियार करने की ताकीद की गई। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

اِذْهَبَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۴۳﴾ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿۴۴﴾ (پ۱۶، طٰہٰ: ۴۳، ۴۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *दोनों फ़िरऔन के पास जाओ बेशक उस ने सर उठाया। तो उस से नर्म बात कहना इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या कुछ डरे।*

---

①....तफ़्सीरे नईमी, जि. 7, स. 464।



www.dawateislami.net

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अपने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की तर्बिय्यत इसी उसूल पर फ़रमाई और फ़रमाया : اَنْزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ या'नी लोगों से उन के मक़ाम व मर्तबे के मुताबिक़ सुलूक करो। चुनान्चे, येही वजह है कि हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बनी अ़ब्दुल अशहल के सरदारों से जब उन के मक़ाम व मर्तबे का लिहाज़ रखते हुवे नर्म लहजे में बात की और दीने हक़ की दा'वत पेश की तो वोह फ़ौरन मुसलमान हो गए।

लिहाज़ा पूरी दुन्या में नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के लिये मुबल्लिग़ीन पर लाज़िम है कि अपने मुख़ातब के मक़ाम व मर्तबे का लिहाज़ रखते हुवे भरपूर त़रीक़े से नेकी की दा'वत पेश करें। जैसा कि आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप मुख़ातब के मक़ाम व मर्तबे का बहुत ज़ियादा लिहाज़ फ़रमाया करते थे। जैसा कि **सज्जादा** नशीन सरकारे कलां मारेहरा शरीफ़ **हज़रते महदी ह़सन मियां** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं जब बरेली शरीफ़ आता तो आ'ला ह़ज़रत ख़ुद खाना लाते और हाथ धुलाते। एक मरतबा मैं ने **सोने की अंगूठी** और **छल्ले** पहने हुवे थे, ह़स्बे दस्तूर जब हाथ धुलवाने लगे तो फ़रमाया : "शहज़ादा हुज़ूर ! येह अंगूठी और



www.dawateislami.net

छल्ले मुझे दे दीजिये !" मैं ने उतार कर दे दिये और बम्बई चला गया । बम्बई से मारेहरा शरीफ़ वापस आया तो मेरी लड़की फ़ातिमा ने कहा : "अब्बा हुज़ूर ! बरेली शरीफ़ के मौलाना साहिब (या'नी आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّهٗ) के यहां से पार्सल आया था, जिस में छल्ले, अंगूठी और एक ख़त़ था जिस में येह लिखा था : "शहज़ादी साहिबा येह दोनों तिलाई अश्या आप की हैं (क्यूंकि मर्दों को इन का पहनना जाइज़ नहीं)"(1)

## मुख़ातब की ज़ेहनी सलाहिय्यत का ख़याल रखना

मुबल्लिग़ीन पर नेकी की दा'वत पेश करते हुवे मुख़ातब की ज़ेहनी सलाहिय्यतों को मद्दे नज़र रखना भी बहुत ज़रूरी है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **उसैद बिन ह़ुज़ैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि वोह बड़े अ़क़्लमन्द थे लिहाज़ा जब ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से येह फ़रमाया कि "मेरे पास बैठ कर मेरी बात सुन लीजिये ! अगर समझ में आ जाए तो इसे मान लीजियेगा और अगर पसन्द न आए तो हम आप को मजबूर नहीं करेंगे बल्कि चले जाएंगे ।" तो उन्हों ने सोचा अगर इस त़रह़ मुआ़मला ह़ल हो सकता है तो ज़ियादा बेहतर है, पस कलामे इलाही के मीठे मीठे बोल सुनते ही सरे तस्लीम ख़म कर दिया । जैसा कि एक रिवायत में है कि एक

①.... ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1 स. 105 ।



www.dawateislami.net

आ'राबी (देहाती) ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मेरी बीवी के शिकम से एक बच्चा पैदा हुवा है जो काला है और मेरा हम शक्ल नहीं, इस लिये मेरा ख़याल है कि येह बच्चा मेरा नहीं है। आ'राबी की येह बात सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : هَلْ لَّكَ مِنْ اِبِلٍ؟ क्या तुम्हारे पास कुछ ऊंट हैं ? बोला : जी हां ! मेरे पास बहुत ज़ियादा ऊंट हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : فَمَا اَلْوَانُهَا؟ उन के रंग कैसे हैं ? बोला : उन के रंग सुर्ख़ हैं। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद पूछा : क्या उन में कुछ ख़ाकी रंग के भी हैं ? अ़र्ज़ की : जी हां ! कुछ ऊंट ख़ाकी रंग के भी हैं। दरयाफ़्त फ़रमाया : فَاَنّٰى اَتَاهَا؟ वोह कहां से आए या'नी सुर्ख़ ऊंटों की नस्ल में ख़ाकी रंग के ऊंट कैसे और कहां से पैदा हो गए ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे सुर्ख़ रंग के ऊंटों के बाप दादाओं में कोई ख़ाकी रंग का ऊंट रहा होगा। इस की रग ने उस को अपने रंग में खींच लिया होगा। इस लिये सुर्ख़ ऊंटों का बच्चा ख़ाकी रंग का हो गया। येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इसी त़रह़ मुमकिन है तुम्हारे बाप दादाओं में भी कोई काले रंग का हुवा हो और उस की रग ने तुम्हारे बच्चे को खींच कर अपने रंग का बना लिया हो और येह बच्चा उस का हम शक्ल हो गया।[1]

[1] ……بخاری، کتاب الطلاق، باب اذا عرض بنفی الولد، الحدیث: ۵۳۰۵، ج۳، ص۴۹۷



www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़मल से भी मा'लूम हुवा कि गुफ़्त्गू मुख़ात़ब की ज़ेह्नी सलाह़िय्यतों के मुत़ाबिक़ हो तो असर रखती है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी येही दर्स दिया करते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि أُمِرْنَا اَنْ نُّكَلِّمَ النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ या'नी हमें लोगों की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ बात करने का हुक्म दिया गया है।(1)

## मुख़ात़ब की ज़ेह्नी सलाह़िय्यत के मुत़ाबिक़ आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن नमाज़ के बा'द देहली (हिन्द) की एक मस्जिद में मश्ग़ूले वज़ीफ़ा थे। एक साह़िब आए और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़रीब ही नमाज़ पढ़ने लगे। जब तक क़ियाम में रहे मस्जिद की दीवार को देखते रहे, रुकूअ़ में भी सर ऊपर उठा कर सामने दीवार ही की त़रफ़ नज़र रखी। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो उस वक़्त तक आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت भी अपना वज़ीफ़ा मुकम्मल कर चुके थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें अपने पास बुला कर शरई मस्अला समझाया कि नमाज़ में किस

---

1 ......فردوس الاخبار، الحديث: ۱۲۱۴، ج ۱، ص ۲۲۹



www.dawateislami.net

किस ह़ालत में कहां कहां निगाह होनी चाहिये। फिर फ़रमाया : बह़ालते रुकूअ़ निगाह पाऊं पर होनी चाहिये। येह सुनते ही वोह साहि़ब क़ाबू से बाहर हो गए और कहने लगे : वाह साहि़ब ! बड़े मौलाना बनते हो ? नमाज़ में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह होना ज़रूरी है और तुम मेरा मुंह क़िब्ले से फेरना चाहते हो ! येह सुन कर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने उन की समझ के मुत़ाबिक़ कलाम करते हुवे फ़रमाया : "फिर तो सजदे में भी पेशानी के बजाए ठोड़ी ज़मीन पर लगाइये !" येह ह़िक्मत भरा जुम्ला सुन कर वोह बिल्कुल ख़ामोश हो गए और उन की समझ में येह बात आ गई कि क़िब्ला रू होने का मत़लब येह नहीं कि अव्वल ता आख़िर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के दीवार को देखा जाए, बल्कि सह़ीह़ मस्अला वोही है जो आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने बयान फ़रमाया।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आप ने कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने मश्हूर मक़ूले كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ (या'नी लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो) पर अ़मल करते हुवे जब एक आ़म शख़्स से उस की अ़क़्ल के मुत़ाबिक़ कलाम किया तो आप की ज़बान से निकले हुवे ह़िक्मत भरे एक जुम्ले ने बरसहा बरस से नमाज़ में ग़लत़ी करने वाले की

(1)....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा अव्वल, स. 304।



www.dawateislami.net

लम्हा भर में इस्लाह़ फ़रमा दी । चुनान्चे, "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश" करने वाले मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि इस मदनी फूल को अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा कर इस्लामी भाइयों को दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों, हफ़्तावार इजतिमाआ़त वग़ैरा में शिर्कत करवाने के लिये इनफ़िरादी कोशिश करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कामयाबी उन के क़दम चूमेगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## शुकूक व शुब्हात दूर करना

मुबल्लिग़ीन पर लाज़िम है कि अगर मुख़ात़ब के ज़ेह्न में कुछ शुकूक व शुब्हात हों या कोई ग़लत़ फ़ह्मी हो तो पहले उस की ज़ेह्नी सलाहिय्यतों के मुत़ाबिक़ दलाइल से इन्दें दूर किया जाए या अन्दाज़े गुफ़्त्गू ऐसा इख़्तियार किया जाए कि येह ख़ुद ब ख़ुद दूर हो जाएं । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **उसैद बिन ह़ुज़ैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ग़ुस्से से भरे लहजे में येह फ़रमाया कि "तुम दोनों यहां किस लिये आए हो ? तुम्हें हमारे कमज़ोरों को वर्ग़लाने और अपने दीन से बहकाने की इजाज़त किस ने दी ? अगर जान प्यारी है तो इसी वक़्त यहां से चले जाओ ।" तो उस वक़्त वोह इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत से



www.dawateislami.net

वाक़िफ़ न थे । फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मीठे मीठे लहजे में उन्हें ह़क़ीक़त से आगाह किया तो वोह मुसलमान हो गए ।

## आ'ला ह़ज़रत की ग़ैर मुस्लिम पर इनफ़िरादी कोशिश

मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि क़ब्ले ज़ोहर ह़ज़रत उस्ताज़ुल उ़लमा मौलाना मौलवी ह़कीम नईमुद्दीन मुरादाबादी व ह़ज़रते मौलाना मौलवी रह़ूम इलाही (मुदर्रिस मद्रसए मन्ज़रुल इस्लाम बरेली) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا आ'ला ह़ज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थे कि एक आरिय्या (या'नी हिन्दू) आया और कहने लगा : मेरे चन्द सुवालात हैं, अगर इन के जवाबात दे दिये गए तो मैं और मेरी बीवी बच्चे सब मुसलमान हो जाएंगे । चूंकि अज़ान हो चुकी थी, न मा'लूम उस के जवाबात में कितना वक़्त सर्फ़ होगा ? येह सोच कर आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت ने फ़रमाया : हमारी नमाज़ का वक़्त है, ठहर जाओ, इस के बा'द जो सुवाल करोगे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जवाब दिया जाएगा । वोह कहने लगा : एक सुवाल तो येही है कि आप के यहां इबादत के पांच वक़्त क्यूं मुक़र्रर हैं ? परमेश्वर की इबादत जितनी भी की जाए अच्छा है । मौलाना नईमुद्दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : येह ए'तिराज़ तो ख़ुद तुम्हारे ऊपर भी वारिद होता है । मौलाना रह़ूम इलाही رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया :



www.dawateislami.net

मेरे पास (तुम्हारे मज़हब की किताब) **सत्यारथ प्रकाश** मकान पर मौजूद है, अभी मंगवा कर दिखा सकता हूं।

अल ग़रज़ तै़ पाया कि जब तक किताब आए, नमाज़ पढ़ ली जाए, वोह आरिय्या इतनी देर फाटक पर बैठा रहा। नमाज़ के बा'द उस ने मुन्दरिजए ज़ैल सुवालात पेश किये :

- ....कुरआन थोड़ा थोड़ा क्यूं नाज़िल हुवा ? एक दम क्यूं न आया जब कि वोह ख़ुदा का कलाम है, ख़ुदा तो क़ादिर था कि एक साथ उतार देता।
- ....आप के नबी को मे'राज की रात ख़ुदा ने बुलाया तो फिर उन्हें दुन्या में वापस क्यूं किया ? वोह तो उसे महबूब थे ?
- ....इबादत पांच वक़्त के मुतअ़ल्लिक़ **सत्यारथ प्रकाश** की इबारत देखना मशरूत़ हुई।

मज़कूरा बाला सुवालात सुन कर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने फ़रमाया : मैं तुम्हारे सुवालों के जवाब अभी देता हूं, मगर तुम ने जो वा'दा किया है उस पर क़ाइम रहो। उस ने कहा : हां ! मैं फिर कहता हूं कि अगर मेरे सुवालात के जवाबात आप ने मा'क़ूल दे दिये तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा और बीवी बच्चों को भी ला कर मुसलमान करा दूंगा। जब ख़ूब क़ौलो क़रार और पुख़्ता वा'दा करा लिया तो आप ने फ़रमाया : पहले सुवाल का तो जवाब येह है कि जो शै ऐ़न ज़रूरत के वक़्त दस्तयाब होती है उस



www.dawateislami.net

की वुक़्अ़त दिल में ज़ियादा होती है इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कलाम को बतदरीज (या'नी दरजा ब दरजा) नाज़िल फ़रमाया।

फिर फ़रमाया : इन्सान बच्चे की सूरत में आता है, फिर जवान होता है, फिर बुढ्ढा, **अल्लाह** तआ़ला तो क़ादिर था बुढ्ढा ही क्यूं न पैदा फ़रमाया ?

फिर फ़रमाया : इन्सान खेती करता है, पहले पौदा निकलता है, फिर कुछ अ़र्से बा'द इस में बाली आती है, इस के बा'द दाना बर आमद होता है, वोह तो क़ादिर था कि एक दम ग़ल्ला क्यूं न पैदा फ़रमाया।

इस के बा'द **सत्यारथ प्रकाश** आ गई जिस में ह़स्बे ज़ैल इबारतें मौजूद थीं :

- .....बाब तीसरा (ता'लीम) पन्दरहवा हेडिंग : "अगनी होतर (या'नी पूजा) सुब्ह़ शाम दो ही वक़्त करे।"
- .....बाब चौथा (ख़ानादारी) **63** हेडिंग : संध्या (हिन्दूओं की सुब्ह़ो शाम की इबादत) दो ही वक़्त करना चाहिये।

इन इबारात को सुन कर उस आरिय्या के लिये क़ाइल होने के सिवा चारा ही क्या था ? लिहाज़ा ! ए'तिराफ़ करते हुवे मे'राज शरीफ़ वाले सुवाल का जवाब चाहा। इस की निस्बत आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने इरशाद फ़रमाया : इसे यूं समझो कि एक



www.dawateislami.net

बादशाह अपनी ममलुकत के इन्तिज़ाम के लिये एक नाइब मुक़र्रर करता है, वोह सूबेदार या नाइब बादशाह के ह़स्बे मन्शा ख़िदमात अन्जाम देता है, बादशाह उस की कारगुज़ारियों से ख़ुश हो कर अपने पास बुलाता है और इन्आ़म व ख़िल्अ़ते फ़ाख़िरा अ़त़ा फ़रमाता है न येह कि उसे बुला कर मुअ़त्त़ल कर देता है और अपने पास रोक लेता है।

येह सुन कर उस ने कहा कि आप ने मेरी पूरी तशफ़्फ़ी फ़रमा दी और मेरी समझ में ख़ूब आ गया, मैं अभी जा कर बीवी और बच्चों को लाता हूं और ख़ुद मुसलमान होता हूं, उन को भी मुसलमान कराता हूं।(1)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** देखा आप ने कि आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت ने कैसे प्यारे अन्दाज़ में मुख़ात़ब की ज़ेह्नी सलाह़िय्यतों के मुत़ाबिक़ उस के इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ शुकूक व शुब्हात दूर फ़रमाए कि वोह अपने बीवी बच्चों समेत मुसलमान हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। और ऐ काश! आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت के सदक़े ऐसी गुफ़्तगू का सलीक़ा हम सब को भी अ़त़ा हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

①....ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा अव्वल, स. 287।



www.dawateislami.net

## ﴾2﴿.....नेकी की दा'वत कैसी है ?

मुआ़मला फ़हमी के हुसूल के लिये दूसरी अहम और बुन्यादी शै येह है कि मुबल्लिग़ीन इस बात का ख़याल रखें कि इन की पेश कर्दा नेकी की दा'वत कैसी है ? लिहाज़ा इन्हें चाहिये कि इस सिलसिले में इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिखाए हुवे त़रीक़ए दा'वत को हमेशा पेशे नज़र रखें। चुनान्चे, दा'वत की अहम्मिय्यत (اَہم۔می۔یت) या'नी क़दरो मन्ज़िलत और ज़रूरत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद अपने महबूबे करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आदाबे दा'वत इरशाद फ़रमाए हैं। जैसा कि पारह **14** सूरए नह्ल की आयत नम्बर **125** में है :

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ (پ۱۴، النحل:۱۲۵)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन से उस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो।*

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! हमारे प्यारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने हमें अह़सन त़रीक़े से दूसरों को नेकी की दा'वत देने की तल्क़ीन फ़रमाई है, हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



www.dawateislami.net

के अख़्लाक़े हसना और अन्दाज़े हुस्ने तब्लीग़ को देखिये कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने परवर दगार की अ़ता कर्दा तौफ़ीक़े मौइ़ज़ए ह़सना से वह़शत व बरबरिय्यत से लबरैज़ ख़ूं रैज़ इन्साने बदतर अज़ ह़ैवान को किस त़रह़ इन्सानिय्यत के बुलन्दो बाला मन्सब पर फ़ाइज़ फ़रमा दिया। हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिगड़े हुवों की किस हुस्ने तदबीर से तक़्दीर को बदलते थे इस की एक ह़सीन झलक मुलाह़ज़ा हो।

## मुझे गुनाह की इजाज़त दीजिये

एक नौजवान हम गमज़दों के दिलों के चैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा और उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिये। येह सुनते ही तमाम सह़ाबए किराम जलाल में आ गए और उसे मारना चाहा तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस को मत मारो। फिर उस को अपने पास बुला कर बिठाया और निहायत ही नर्मी के साथ फ़रमाया : ऐ नौजवान मर्द ! क्या तुझे पसन्द है कि कोई शख़्स तेरी मां से ऐसा फ़े'ल करे ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं इस को किस त़रह़ रवा (जाइज़ व मुबाह़) रख सकता हूं ? तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर दूसरे लोग तेरे बारे में इस को किस त़रह़ रवा रख



www.dawateislami.net

सकते हैं ? फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तेरी बेटी से अगर ऐसा करे तो क्या तू इस को पसन्द करेगा ? अ़र्ज़ की : जी नहीं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर पूछा कि तेरी बहन से अगर कोई ऐसा नाशाइस्ता ह़रकत करे या फिर ख़ाला से ? इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक एक रिश्ते के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल फ़रमाया और वोह कहता रहा मुझे पसन्द नहीं और लोग भी रिज़ामन्द नहीं । तब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ रख कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : या इलाही ! इस के दिल को पाक फ़रमा दे और इस की शर्मगाह को बचा ले और इस का गुनाह बख़्श दे । इस के बा'द वोह शख़्स तमाम उ़म्र ज़िना से बेज़ार रहा ।[1]

*इजाबत का सहरा इनायत का जोड़ा*
*दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद*
*इजाबत ने झुक कर गले से लगाया*
*बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से निकला हुवा हर एक लफ़्ज़ उस नौजवान

[1] ……مسند احمد، الحدیث: ۲۲۲۷۴، ج۸، ص۲۸۵



www.dawateislami.net

को झंझोड़ने के लिये काफ़ी था और फिर आप की दुआ की बरकत से वोह नौजवान हमेशा के लिये उस फ़े'ले बद से ताइब हो गया। लिहाज़ा मुबल्लिग़ीन पर भी लाज़िम है कि इनफ़िरादी कोशिश के दौरान ऐसे अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब फ़रमाएं जो न सिर्फ़ मुख़ातब के जिगर में तासीर का तीर बन कर पैवस्त हो जाएं बल्कि उसे गुनाहों भरे माहोल से निकाल कर कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल से वाबस्ता भी कर दें और वोह हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन जाए या फिर मुसाफ़िर बनने की निय्यत कर ले।

## सय्यिदुना मुस्अब बिन उ़मैर के दीगर अवसाफ़े हमीदा

### ज़ोहदो तक़्वा

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुसाह़बत में रहते हुवे हम पर रन्जो अलम के ज़ह्र आलूद तीर बरसे लेकिन हम ने उन्हें **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ढाल पर ले लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बूले



www.dawateislami.net

इस्लाम से पहले सोने के चम्मच से खाने और इन्तिहाई क़ीमती लिबास पहनने वाले नौजवान थे, मगर क़बूले इस्लाम के बा'द उन्हों ने ज़ोह्दो तक़्वा के आबख़ोरे ख़ूब भर भर कर पिये और इस क़दर मशक़्क़तें बरदाश्त कीं, कि मैं ने देखा कि उन की खाल सांप की कींचली (सांप की जिल्द पर सफ़ेद जाली नुमा शफ़्फ़ाफ़ झली) की त़रह़ जिस्म से जुदा हो रही थी।[1]

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सोना भट्टी से गुज़रने के बा'द जिस त़रह़ कुन्दन हो जाता है इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी राहे ख़ुदा में हर क़िस्म के मसाइब व आलाम सहने के सबब इस्तिक़ामत का पहाड़ बन चुके थे। दीने मतीन की ख़ात़िर तकालीफ़ सहना उन के ह़क में गोया मौसिमे बहार का आना था।

## बारगाहे रिसालत में पज़ीराई

दुन्यावी ऐ़शो इ़शरत की सह़र अंगेज़ियों को परेकाह (घास के तिनके) के बराबर भी न समझने वाले और अबदी ने'मतों के ह़ुसूल की ख़ात़िर सह़रा के ख़ारों (कांटों) को गले लगाने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी बे शुमार ख़ूबियों के साथ साथ ज़ोह्दो तक़्वा की बिना पर बारगाहे रिसालत में इन्तिहाई मक़्बूल थे, एक मरतबा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के

[1] .....اسد الغابۃ، باب مصعب بن عمیر، ج۵، ص۱۹۱



www.dawateislami.net

इख़्तियारी फ़क़्रो फ़ाक़ा का आ़लम देख कर चश्माने सरकार भी अश्कबार हो गईं। चुनान्चे,

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि हम एक बार सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिद में ह़ाज़िर थे, अचानक **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे, जिन की ह़ालत येह थी कि पूरा जिस्म ढांकने के लिये मुनासिब लिबास मुयस्सर न था बल्कि एक ही चादर से जिस्म पोशी की कोशिश फ़रमा रहे थे और उस पर भी जगह जगह चमड़े के पैवन्द लगे हुवे थे, अपने जांनिसार के इस्लाम क़बूल करने से पहले की **ऐ़श व तनअ़ूम** वाली ज़िन्दगी याद कर के और मौजूदा फ़क़ीराना व ज़ाहिदाना ह़ालत मुलाह़ज़ा फ़रमा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने करम अश्कबार हो गईं।[1]

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़िस्मत पर हज़ारों जानें क़ुरबान! जिन के फूलों की सेज पर गुज़रे हुवे माज़ी को याद कर के सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने करम भी अश्कबार हो गईं।

---

[1] ……ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، الحدیث: ۲۴۸۲، ج ۴، ص ۲۱۵



www.dawateislami.net

**मुफ़स्सिरे शहीर,** हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन का गुज़श्ता ऐश का ज़माना याद फ़रमाया तो रो पड़े या उन पर रहम फ़रमाते हुवे या उन के तर्के दुन्या और आख़िरत के दरजात पर खुशी से रोए। पहला एहतिमाल ज़ियादा क़वी है। ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तर्के दुन्या पर हज़रते उमर रोए तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें रोने से मन्अ फ़रमा दिया वोह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सब्र है और यहां हज़रते मुस्अब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه पर खुद रोए येह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रहमत है।[1]

*काफ़िर है मुसलमां तो न शाही न फ़क़ीरी*
*मोमिन है तो करता है फ़क़ीरी में भी शाही*
*काफ़िर है तो शमशीर पे करता है भरोसा*
*मोमिन है तो बे तेग़ भी लड़ता है सिपाही*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## अख़्लाके़ हमीदा की गवाही

हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन रबीआ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना **मुस्अब बिन उमैर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इस्लाम

①.....मिरआतुल मनाजीह, किताबुर्रिक़ाक़, जिल्द. 7, स. 170



www.dawateislami.net

लाने से ले कर शहीद होने तक मेरे सब से बेहतरीन दोस्त थे, हम ने ह़बशा दोनों मरतबा इकट्ठे ही हिजरत की वोह हर जगह मेरे रफ़ीक़ रहे और मैं ने उन से बढ़ कर हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर किसी को न देखा और न ही उन से बढ़ कर किसी को वा'दा पूरा करने वाला पाया ।(1)

## बद्र व उहुद में शरफ़े अ़लम बरदारी

रमज़ानुल मुबारक 2 हिजरी ब मुत़ाबिक़ मार्च 624 ई. में मैदाने बद्र में जब इस्लामी लश्कर की सफ़ें दुरुस्त हो गईं तो शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को लश्करे इस्लाम की अ़लम बरदारी का फ़रीज़ा सोंपा और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मन्शा के मुत़ाबिक़ परचमे इस्लाम को उठा कर उस की मख़्सूस जगह गाड़ दिया और उस की ह़िफ़ाज़त करने लगे ।(2)

इसी त़रह़ शव्वालुल मुकर्रम 3 हिजरी ब मुत़ाबिक़ मार्च 625 ई. में जब दोनों लश्कर मैदाने उहुद में आमने सामने हुवे तो एक त़रफ़ अबू सुफ़्यान अपने लश्कर की सफ़ें दुरुस्त करने के बा'द

---

[1]......الطبقات الکبری لابن سعد، ج۳، ص۸۷

[2]......المغازی للواقدی، ج۱، ص۵٦



www.dawateislami.net

बनू अ़ब्दुद्दार के नौजवानों का जज़्बए बहादुरी उभारते हुवे बोला : अगर किसी क़ौम का परमच जंग के दौरान सरनिगूं हो जाए तो फिर क़ौम का मैदाने जंग में जमा रहना मुमकिन नहीं, लिहाज़ा ऐ बनू अ़ब्दुद्दार के नौजवानो ! हमारे परचम की हिफ़ाज़त करना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है। अबू सुफ़्यान की येह बात बनू अ़ब्दुद्दार के नौजवानों के ख़ून को गर्मा गई और वोह बिफर कर बोले : ऐ अबू सुफ़्यान ! क्या येह कहना चाहते हो कि हम अपने परचम को दुश्मन के ह़वाले कर देंगे ? ऐसा हरगिज़ न होगा तुम ख़ुद देख लोगे हम इस की हिफ़ाज़त में गर्दनें कटा देंगे। फिर वोह नेज़े तान कर परचम के गिर्द ह़िसार बांध कर खड़े हो गए कि किसी को इस के क़रीब भी न फटकने देंगे।

इसी असना में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी मर्दाने ख़ुदा की सफ़ों को दुरुस्त फ़रमा चुके थे। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : मुशरिकीने मक्का का अ़लम बरदार कौन है ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : बनू अ़ब्दुद्दार। पस आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि हम उन से ज़ियादा इस बात का ह़क़ रखते हैं कि अपना परचम बनू अ़ब्दुद्दार के ह़वाले करें। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का नाम ले कर पुकारा : **اَيْنَ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ؟**



www.dawateislami.net

कहां हैं **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** ? यूं मा'लूम होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी पुकार के इन्तिज़ार में थे कि कब इन के आक़ा इन्हें इस ख़िदमत के लिये आवाज़ दें। चुनान्चे, फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ह़ाज़िर हूं। सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें मुहाजिरीन की अ़लम बरदारी का शरफ़ पाने की नवीद दी तो वोह येह सआ़दत ह़ासिल होने पर ख़ुशी से फूले न समाए और उन्हों ने परचमे इस्लाम को थाम कर सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने मख़्सूस जगह नसब कर दिया।[1]

इमाम मुह़म्मद बिन यूसुफ़ सालिह़ी शामी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **942** हि.) सुबुलुल हुदा वर्रशाद में फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन का अ़लम अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले कर दिया।[2]

## आक़ा पर जान क़ुरबान कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मैदाने उ़ह़ुद में जिस बहादुरी व शुजाअ़त का मुज़ाहरा किया वोह तारीख़

[1] .....المغازی للواقدی، ج ۱، ص ۲۲۰

[2] .....سبل الهدی والرشاد، ج ۴، ص ۱۹۰



www.dawateislami.net

में सुन्हरी हुरूफ़ से रक़म (लिखा हुवा) है। चुनान्चे, मरवी है कि जब मैदाने उहुद में कुफ़्फ़ारे मक्का सर पर पाउं रख कर भागे और मुसलमान फ़त्ह की ख़ुशी से सरशार माले ग़नीमत इकठ्ठा करने के लिये अपनी मख़्सूस जगहों से हट गए तो इन्हें ग़ाफ़िल पा कर भागते हुवे मुशरिकीन ने अचानक पलट कर हम्ला कर दिया जिस की वजह से मुसलमानों को नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान भी पहुंचा। इसी अब-तरी व अफ़रा तफ़री के आ़लम में बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने दुश्मनाने इस्लाम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दूर रखने के लिये बहादुरी व जांनिसारी की ऐसी अ़ज़ीम मिसालें क़ाइम कीं, कि चश्मे फ़लक आज भी ह़ैरान और दुन्या अंगुश्त ब-दन्दां है क्यूंकि जांनिसाराने मुस्त़फ़ा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गिर्द सीसा पिलाई दीवार खड़ी कर दी और कुफ़्फ़ारे मक्का को अ़मली त़ौर पर बता दिया कि वहां तक जाने से पहले हमारी लाशों पर से गुज़रना होगा। चुनान्चे,

**जान दे दी मगर**
**परचमे इस्लाम पर आंच न आने दी**

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सा'द बिन मुनीअ़ हाशिमी बसरी अल मा'रूफ़ इब्ने सा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा **230** हि.) **अल त़बक़ातुल कुब्रा** में फ़रमाते हैं कि इस्लामी लश्कर में अबतरी



www.dawateislami.net

फैली मगर ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ साबित क़दम रहे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ारे मक्का के बढ़ते हुवे लश्कर पर टूट पड़े तो बदबख़्त इब्ने क़मीआ[1] ने मौक़अ़ पा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के उस दस्ते अक़्दस पर तल्वार से वार किया जिस में परचम था, वोह हाथ कट कर गिरा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने परचम दूसरे हाथ से थाम लिया, उस बद बख़्त ने उस हाथ को भी जिस्म से जुदा कर दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर भी परचमे इस्लाम को सरनिगूं न होने दिया बल्कि अपने कटे हुवे बाज़ूओं के ह़िसार में ले लिया, फिर उस दुश्मने इस्लाम ने आख़िरी वार करते हुवे नेज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सीने में पिरो दिया और यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जामे शहादत नोश फ़रमा गए। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाप शरीक भाई ह़ज़रते अबू रूम बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ[2] और बनू अ़ब्दुद्दार के ह़ज़रते सुवैबत़ बिन सा'द बिन ह़र्मला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

①.....येह बदबख़्त इब्ने क़मीआ वोही है जिस ने इसी ग़ज़वे में चेहरए मुस्त़फ़ा पर वार कर के उसे ज़ख़्मी कर दिया था।

②.....ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबू रूम बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाप शरीक भाई थे, इन का शुमार अव्वलीन इस्लाम क़बूल करने वाले सह़ाबए किराम में होता है, येह दूसरी हिजरते ह़बशा में शरीक हुवे। इन की कोई अवलाद न थी।

(تاریخ مدینہ دمشق، ج ۶۰، ص ۳۴۶)



www.dawateislami.net

ने आगे बढ़ कर फ़ौरन परचमे इस्लाम को थाम लिया और इसे सरनिगूं न होने दिया। फिर येह परचम मदीना वापसी तक हज़रते अबू रूम बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ही रहा।(1)

एक रिवायत में है कि हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द परचमे इस्लाम को सरनिगूं होने से बचाने के लिये हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शक्ल में एक फ़िरिश्ते ने आगे बढ़ कर थाम लिया। और अल **मुसन्निफ़ लि इब्ने अबी शैबा** में है कि ग़ज़्वए उहुद के दिन सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **मुस्अ़ब ! आगे बढ़ो !** तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद नहीं हो गए ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां ! वोह तो शहीद हो चुके हैं मगर उन की शक्लो सूरत में एक फ़िरिश्ता उन की जगह खड़ा हुवा है जिस का नाम भी **मुस्अ़ब** ही है।(2)

## बा हिम्मत ज़ौजा

मरवी है कि हज़रते सय्यिदतुना ह़मना बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ग़ज़्वए उहुद में ज़ख़्मियों को पानी पिलाने की

---

[1]……الطبقات الکبری لابن سعد، ج ۳، ص ۸۹

[2]……مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب المغازی، ھذا ما حفظ ابوبکر فی اُحد، الحدیث: ۲۹، ج ۸، ص ۴۸۹ مفھوماً



www.dawateislami.net

ज़िम्मेदारी बड़ी बहादुरी से सर अन्जाम दी। जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को जंग के ख़ातिमे के बा'द मैदाने उहुद की जानिब बढ़ते हुवे देखा तो इरशाद फ़रमाया : ऐ ह़मना ! अपने अ़ज़ीज़ की शहादत पर सब्र कर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां सवाब की उम्मीद रख। अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस ने मर्तबए शहादत पाया है ? फ़रमाया : तुम्हारे मामूं सय्यिदुना ह़मज़ा शहीद हो गए हैं। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फ़िरना।) कहा और उन के लिये मग़्फ़िरत व रह़मत की दुआ करते हुवे अ़र्ज़ की : उन्हें शहादत मुबारक हो। सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर पहले की त़रह़ सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई तो अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और कौन शहीद हुवा है ? फ़रमाया : तुम्हारा भाई **अ़ब्दुल्लाह** बिन जह़श। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा और उन के लिये भी मग़्फ़िरत व रह़मत की दुआ करते हुवे अ़र्ज़ की : उन्हें भी जन्नत मुबारक हो। और जब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीसरी मरतबा सब्र का दामन थामे रहने पर अज्रो सवाब की नसीह़त फ़रमाई तो अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और कौन शहीद हुवा है ? इस बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब येह बताया कि उन के शोहर ह़ज़रते



www.dawateislami.net

सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मर्तबए शहादत पर फ़ाइज़ हो गए हैं तो येह अन्दोहनाक ख़बर सुन कर उन के सब्र का दामन हाथ से छूट गया और वोह ग़म से निढ़ाल हो गईं और बे इख़्तियार उन के दिले पुर दर्द से एक आहे सर्द अल्फ़ाज़ का जामा पहन कर कुछ यूं निकली : "وَاحُزْنَاہ! हाए अफ़्सोस !" तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक औ़रत के नज़्दीक जो मर्तबा शोहर का होता है वोह किसी दूसरे रिश्ते का नहीं हो सक्ता। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ ह़मना ! तू ने अपने शोहर की शहादत पर ही येह क्यूं कहा ? अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे जब उन की यतीम बच्ची की परवरिश का ख़याल आया जिस की भारी ज़िम्मेदारी मेरे नातुवां कन्धों पर आन पड़ी है तो इसी ख़ौफ़ से बे इख़्तियार मेरे मुंह से येह अल्फ़ाज़ निकल गए। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने करम फ़रमाते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अवलाद को अपनी दुआ़ओं से नवाज़ा कि यक़ीनन उन से हुस्ने सुलूक किया जाएगा, फिर बा'द में जब ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़मना बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से निकाह़ फ़रमा लिया तो वोह सब से ज़ियादा ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी का ख़याल रखा करते।[1]

---

[1] .....المغازی للواقدی، ج ۱، ص ۲۹۱



www.dawateislami.net

## क़ातिल की इब्रतनाक मौत

**किताबुल मग़ाज़ी** में है कि जब बदबख़्त इब्ने **क़मीआ** ने हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अबदी ज़िल्लतों का ह़क़दार क़रार देते हुवे कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : "اَقْمَاَہُ اللّٰہُ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लीलो रुस्वा फ़रमाए। चुनान्चे, वोह बकरी का दूध दोहने के लिये उसे पकड़े हुवे था कि अचानक एक बकरी ने सींग मार मार कर उस का कचूमर निकाल दिया और यूं वोह पहाड़ों के दरमियान मुर्दा ह़ालत में पाया गया।(1)

## तक्फ़ीन

एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने खाना रखा गया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस दिन रोज़े से थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की लज़ीज़ ने'मतें देखीं तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : قُتِلَ مُصْعَبُ بْنُ عُمَیْرٍ وَکَانَ خَیْرًا مِنِّی या'नी हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद कर दिये गए हालांकि वोह मुझ से बेहतर थे। और उन को एक ऐसी चादर में कफ़नाया गया कि اِنْ غُطِّیَ رَاْسُہٗ بَدَتْ رِجْلَاہُ अगर सर को छुपाते तो

---

(1) ...... المغازی للواقدی، غزوہ احد، ج ۱، ص ۲۷۶



www.dawateislami.net

पैर खुल जाते وَاِنْ غُطِّیَ رِجْلَاہُ بَدَا رَأْسُہٗ और अगर पैरों को छुपाते तो सर खुल जाता।(1)

और एक रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सर ढकते तो पाउं खुल जाते और पाउं ढकते तो सर खुल जाता। मोह़सिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें हुक्म दिया कि हम चादर से उन का सर ढांप दें और पाउं पर **इज़्ख़िर** (नामी एक क़िस्म की खुदरू घास) डाल दें।(2)

## तदफ़ीन

ह़ज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र मुबारक सरकार के हुक्म से बनाई गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ता क़ियामे क़ियामत ज़मीन की गोद में आराम करने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रूम बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना **सुवैबित़** बिन सा'द बिन ह़र्मला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ब्र में उतारा।(3)

---

[1]......السنن الکبری للبیھقی، کتاب الجنائز، باب الدلیل علی جواز التکفین فی ثوب واحد، الحدیث: ۲۲۸۳، ج۳، ص ۵۶۳

[2]......بخاری، کتاب الجنائز، باب اذا لم یجد کفنا، الحدیث: ۱۲۷۶، ج ۱، ص ۴۳۱

[3]......الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ج۳، ص ۹۰



www.dawateislami.net

## अनमोल दर्स

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राहे ख़ुदा में दी जाने वाली क़ुरबानियों पर सद करोड़ मरह़बा ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम की ख़ातिर ऐ़श भरी ज़िन्दगी को छोड़ा और जहाने फ़ानी से कूच के वक़्त उ़श्शाक़ के लिये येह **अनमोल दर्स** दिया कि **जीना हो तो ऐसा और मरना हो तो ऐसा** । ज़िन्दगी की लत़ाफ़तों और राह़तों में वोह मज़ा नहीं जो मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जान वार देने में है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुन्या की ने'मतों से माला माल थे तो ख़ूब मज़े उड़ाए और जब इन फ़ानी ने'मतों से मुंह मोड़ कर अबदी व सरमदी ने'मतों की जानिब मुतवज्जेह हुवे तो न ज़िन्दगी में पूरा लिबास मुयस्सर आया और न मरने के बा'द पूरा कफ़न मिला ।

चुनान्चे, राहे ख़ुदा की इन आज़माइशों पर सब्र के बदले इन्हें कैसा प्यारा इन्आ़म मिला कि जब **रह़मते आ़लम , नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शुहदाए उ़हुद के पास तशरीफ़ लाए तो इरशाद फ़रमाया : मैं इन लोगों पर गवाह हूं कि जो बन्दा राहे ख़ुदा में ज़ख़्मी हो (कर मर्तबए शहादत पर फ़ाइज़ हो) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में उठाएगा कि उस के ज़ख़्म से ताज़ा ख़ून बह रहा होगा जिस का रंग तो ख़ून जैसा ही होगा मगर बू कस्तूरी की होगी । (ऐ मेरे जांनिसार सह़ाबा ! तदफ़ीन के वक़्त) ख़ास ख़याल



www.dawateislami.net

रखना कि जिसे इन शुहदा में से कुरआने करीम ज़ियादा याद हो उसे क़ब्र में दूसरों से पहले रखना ।[1] और हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैदाने उहुद से वापसी के वक़्त बिइज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना **मुस्अ़ब बिन उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर शुहदा के पास ठहर गए और इरशाद फ़रमाया : मैं गवाही देता हूं कि तुम बारगाहे खुदावन्दी में ज़िन्दा हो । इस के बा'द आप ने लोगों से इरशाद फ़रमाया : इन की कुबूर की ज़ियारत कर के इन पर सलामों के नज़राने पेश करना, क़सम उस की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! क़ियामत तक जो भी इन्हें सलाम करेगा येह उस को सलाम का जवाब देंगे ।[2]

*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शुहदाए उहुद पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1] .....مسند احمد، الحدیث: ۲۳۷۱۸، ج۹، ص۱۶۶

[2] .....المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۷۰۰، ج۳، ص۷



www.dawateislami.net

# ماخذومراجع


| نمبر شمار | کتاب | مصنف/مولف |
|---|---|---|
| 1 | قرآن مجید | کلام باری تعالیٰ<br>مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 2 | کنزالایمان | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ<br>مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 3 | التفسیر الکبیر | امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ<br>دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 4 | روح المعانی | ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ<br>دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 5 | تفسیر نعیمی | حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ<br>ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور |
| 6 | مصنف ابن ابی شیبہ | حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی، متوفی ۲۳۵ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ |
| 7 | المسند | امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ |
| 8 | صحیح البخاری | امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 9 | صحیح مسلم | امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ<br>دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 10 | سنن ابن ماجہ | امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ<br>دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ |




www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 11 | سنن الترمذی | امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ |
| 12 | مسند ابی یعلی | شیخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 13 | المعجم الاوسط | امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ |
| 14 | المستدرک | امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ<br>دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 15 | شعب الایمان | امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ |
| 16 | السنن الکبری | امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ |
| 17 | الزہد الکبیر | امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ<br>مؤسسۃ الکتب الثقافیہ ۱۴۱۷ھ |
| 18 | فردوس الاخبار | حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 19 | تاریخ مدینہ دمشق | علامہ علی بن حسن ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ |
| 20 | الترغیب والترہیب | امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 21 | کنز العمال | علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ |
| 22 | الجامع لاخلاق الراوی وآداب السامع | امام حافظ ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ<br>مکتبۃ المعارف، الریاض ۱۴۰۶ھ |



www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 23 | فیض القدیر | علامہ محمد عبدالرء وف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ<br>دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ |
| 24 | مرآۃ المناجیح | حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ<br>ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور |
| 25 | المغازی للواقدی | ابو عبد اللہ محمد بن عمر بن واقد الواقدی، متوفی ۲۰۷ھ<br>مؤسسۃ الاعلمی للمطبوعات، بیروت ۱۴۰۹ھ |
| 26 | السیرۃ النبویۃ | ابو محمد عبد الملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ<br>دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ |
| 27 | الروض الانف | الامام ابو القاسم عبد الرحمن بن عبد اللہ خثعمی، متوفی ۵۸۱ھ<br>دارالکتب العلمیۃ بیروت |
| 28 | البدایہ والنہایہ | عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ<br>دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 29 | المواہب اللدنیہ | شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ<br>دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۶ھ |
| 30 | سبل الھدی والرشاد | محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی ۹۴۲ھ<br>دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۸ھ |
| 31 | شرح المواہب | محمد زرقانی بن عبد الباقی بن یوسف، متوفی ۱۱۲۲ھ<br>دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ |
| 32 | الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب | ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد بن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ<br>دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ |
| 33 | اسد الغابہ | امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ<br>دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ |
| 34 | معرفۃ الصحابہ | حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ<br>دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ |



www.dawateislami.net

| | | |
|---|---|---|
| 35 | الطبقات الکبریٰ | محمد بن سعد بن منیع ہاشمی، متوفی ۲۳۰ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ |
| 36 | قوت القلوب | شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۶ھ |
| 37 | احیاء علوم الدین | امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ<br>دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء |
| 38 | کیمیائے سعادت | امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ<br>انتشارات گنجینہ، تہران |
| 39 | مکاشفۃ القلوب | امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ<br>دار الکتب العلمیہ، بیروت |
| 40 | فتاوی رضویہ | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ<br>رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور |
| 41 | حیات اعلیٰ حضرت | حضرت علامہ مولانا ظفر الدین بہاری، متوفی ۱۳۸۲ھ<br>مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 42 | سیرت مصطفےٰ | علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ---<br>مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |
| 43 | نیکی کی دعوت کے فضائل | شیخ اسعد محمد سعید الصاغرجی<br>مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ |
| 44 | تعارف امیر اہلسنت | مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی |



www.dawateislami.net

# दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान हज़रते मौलाना मुहम्मद इमरान अत्तारी سلّمہ الباری के तहरीरी बयानात

## तब्अ शुदा


(1) फ़ैज़ाने मुर्शिद (कुल सफ़्हात : 46)
(2) एहसासे ज़िम्मेदारी (कुल सफ़्हात : 50)
(3) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़्हात : 68)
(4) मदनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (कुल सफ़्हात : 32)
(5) सीरते सय्यिदुनाअबुद्दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ (कुल सफ़्हात : 75)
(6) बुराइयों की मां (कुल सफ़्हात : 112)
(7) ग़ैरत मन्द शोहर (कुल सफ़्हात : 48)
(8) सहाबी की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्हात : 124)
(9) पीर पर ए'तिराज़ मन्अ है (कुल सफ़्हात : 60)
(10) जन्नत का रास्ता (कुल सफ़्हात : 56)
(11) मक़्सदे हयात (कुल सफ़्हात : 60)
(12) सदक़े का इन्आम (कुल सफ़्हात : 60)
(13) एक आंख वाला आदमी (कुल सफ़्हात : 48)
(14) जन्नत की तय्यारी (कुल सफ़्हात : 134)
(15) वक़्फ़े मदीना (कुल सफ़्हात : 86)
(16) मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (कुल सफ़्हात : 73)
(17) सूद और इस का इलाज (कुल सफ़्हात : 92)
(18) प्यारे मुर्शिद (कुल सफ़्हात : 48)
(19) फ़ैसला करने के मदनी फूल (कुल सफ़्हात : 56)
(20) जामेए शराइत पीर (कुल सफ़्हात : 88)
(21) कामिल मुरीद (कुल सफ़्हात : 48)
(22) अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 480)
(23) हमें क्या हो गया है ? (कुल सफ़्हात :116)
(24) मौत का तसव्वुर (कुल सफ़्हात :44)
(25) बेटी की परवरिश (कुल सफ़्हात :72)
(26) गुनाहों की नुहूसत (कुल सफ़्हात : 112)


## ज़ेरे तरतीब

(1) एक ज़माना ऐसा आएगा
(2) मरज़ से क़ब्र तक



www.dawateislami.net

# याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी

| उ़नवान | सफ़ह़ा | उ़नवान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

# याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी

| उनवान | सफ़्हा | उनवान | सफ़्हा |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |



www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

# सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तबलीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ


MAKTABATUL MADINA

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, पहला मन्ज़िला, 50 टनटन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई-400009, महाराष्ट्र ☎ 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तिलंगाना ☎ (040) 24572786

421, URDU MARKET, MATIA MAHAL, JAMA MASJID, DELHI - 110006 ☎ (011) 23284560

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, web : www.dawateislami.net

MC 1286